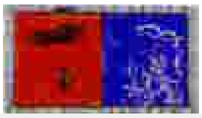
'विदेह' २६९ म अंक ०१ मार्च २०१९ (वर्ष १२ मास १३५ अंक २६९)

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Google समूह Join Videha googlegroups

संपादकीय

बीहनि कथाक नामपर घमर्थन- गजेन्द्र ठाकुर

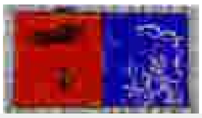
बीहनि कथा, लघु कथा आकि अति लघु (घुनसी) कथा, कोन नाम ऐ नव विधाक देल जाए?

ऐ घमर्थनमे मैथिली बीहनि कथाक जे मूल प्रकृति फरिछा कऽ बहार भेल अछि, मैथिली आ मिथिलावासीक मधुर वाणीक कटाह-धराह मारिक (चेंगरा-पोठी चालि दे रोहुक सीर विषाय- चन्दा झा) अस्त्र, से दबा जकाँ गेल अछि। बीहनि कथा ने हास्य-कणिका अछि आ ने अति लघु कथा। जेना पैघगर कथा भेने लघु-कथा उपन्यास नै होइए, आ छोटगर भेने उपन्यास लघुकथा आकि अति-लघु कथा नै होइए, तहिना बीहनि कथा छोट लघुकथा कैँ नै कहि सकै छी। जँ लेखक अति-लघुकथा कैँ बीहनि कथा कहै छथि तँ ओ फरिछा कऽ बहार भेल बीहनि कथाक परिभाषासँ अपरिचित छथि। मुदा अति-लघुकथामे लघुकथाक तत्त्व अनबा लेल बड्ड मेहनति आ प्रतिभा लागत, तखनो ओकर आकार ओकरा अधखिच्चूए राखत। धराह लेखकक जे छोट सीझल कथा, सएह भेल बीहनि कथा, एतऽ सेहो बड्ड मेहनति आ प्रतिभा लागत मुदा तकरा बाद जे पाकबहराएत से अधखिच्चू नै रहत आ नहिये गिल्ल, सीझलो रहत आ फरहरो रहत। आ सएह भेल असली बीहनि कथा।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

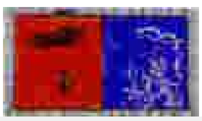
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

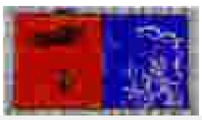
लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

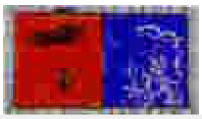
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह सम्मान*: सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. गद्य

उमेश मण्डल

(मैथिली लेखकक रचना संसारसँ बीछल विचारक पाम्फलेटक पोथी)

जगदीश प्रसाद मण्डल

राजदेव मण्डल

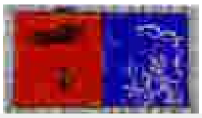
डॉ. शिव कुमार प्रसाद

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

राम विलास साहु

नन्दविलास राय

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कपिलेश्वर राउत

प्रीतम कुमार निषाद

मोहनराज 'गगन'

बीहनि कथा

---नव प्रयोगक विवाद व्यर्थ थिक, आऊ नव सदस्यक स्वागत अपनेक सभगोटे करी

---अहाँ बड़ बुझै छियै
सभसँ पिछला पाँतिमे बैसल जोगिंदरा तामसे बाजल

---की कहबाक अर्थ अछि अपनेक खुलिकँ बाजू, कथीक विरोध?

---किछु नए, मुदा एहि बगीचामे कोनो नवका गाछ आब नए लगब' देव, किछ भए जाय।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

वापसी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

राजदेव मण्डल

पात्र परिचय-

1. **पतिलाल-** (दहेजक लोभी बेकती)
2. **लुतीचन-** (पतिलालक ग्रामीण)
3. **कंतलाल-** (पतिलालक बेटा)
4. **चन्देसर-** (पतिलालक समधी)
5. **फूलोदाय-** (कंतलालक पत्नी आ चन्देसरक बेटी)
6. **सुखबा-** (चन्देसरक बेटा)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

7. **घोंघाय-** (चन्देसरक ग्रामीण)
8. **चटपटिया-** (चन्देसरक ग्रामीण)
8.

अंकप्रारम्भ

प्रथम दृश्य

स्थान- पतिलालक दुआरि।

समय- दिन।

लुतीचनक प्रवेश

लुतीचन- (जोरसँ आवाज दैत अछि।)

काकाऽऽऽयौ काकाऽ ऽ। अँगनामे छिऐ यौ। एने आऊ कनी।

(पतिलाल भीतरसँ निकलैत अछि।)

पतिलाल- किए एते जोरसँ हल्ला करै छँह। बाज ने की बात छिऐ।

लुतीचन- काल्हि साँझमे हाट गेल छेलौं। अहाँ समधीक भाय भेटल छल। समधी बेमार अछि। ओ कहलक भैंट करबाक लेल।

पतिलाल- धुर, की भैंट करबै। बियाहमे जे दहेजक रूपैआ बॉंकी रहि गेलै से अखनी तक नहि देलक। दू गोरेक सोझामे गछौटी केने छल।

लुतीचन- छोड़ि दहक आब ओइ गप्पकैं। कहबियो छै- भेल बिआह आब करब की।

पतिलाल- केना छोड़ि देबइ। ऐ कारणे तँ अँगनामे माए बेटा दुनू मिलि कऽ हमरासँ लड़ैत रहैए।

लुतीचन- ओतए जेबहक तब ने कोनो बातो हेतह।

पतिलाल- तहूँ चल ने लुतीचन। दुनू गोरे रहबै तँ गप्पो चलबैमे ठीक रहतै।

लुतीचन- ठीके छै। हमहूँ जाएब। ओनएसँ बजारक काजो केने आएब। अहाँआऊ हम तैयार रहब।

q

(कहैत लुतीचन प्रस्थान करैत अछि।)

सीन ड्राप।

दोसर दृश्य-

समय- दिन

स्थान- (पतिलालक समधी–चन्देसरक घर।

(पतिलाल आ लुतीचनक प्रवेश)

लुतीचन- दुआरिपर तँ कोय नहि अछि।

(अँगनासँ कनबाक स्वर आबि रहल अछि।)

पतिलाल- (कान लगा कऽ सुनैत अछि)

यौ समधीजी छी यौ। अँगनासँ निकलू ने। हम दुआरिपर ठाढ़ छी।

(कनबाक स्वर मद्धिम भऽ जाइत अछि। चन्देसरक जेठ बेटा सुखबा आँखि पोछैत निकलैत अछि।)

सुखबा- आऊ बाबू, अँगने आऊ।

बाबूजी नहि रहला। चलि गेला स्वर्ग। आब हुनकासँ भैंट नहि होएत।

पतिलाल- ओह! जुलुम भऽ गेलइ। की भेल छेलै?

सुखबा- (कनैत स्वरमे) किछो नहि भेल रहै। दू-तीन दिनसँ बोखार लगै छेलै। आइ एकाएक छातीमे दरद उठलै आ जाबे सचेत भऽ कऽ असपताल लऽ जैतौं ताबे पराने छुटि गेलइ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

पतिलाल- अच्छा सबुर करह। कनलासँ किछ नहि हेतह। की करबहक, भगवानकेँ इएह मंजूर छेलइ। होनीकेँ कियो नहि रोकि सकैत अछि। धरतीपर एतबे दिनक दाना-पानी लिखल छेलैन। धीरज तँ बान्है पड़तह।

सुखबा- हँ, से तँ ठीके। आब दोसर उपाये कोन छइ। मुदा पहिनेसँ एहेन बातक कनियोँ शंका नहि छेलइ।

पतिलाल- हौ, एहेन मृत्यु तँ सभसँ नीक। किनको सेवो-टहलक अवसर नहि भेटलैन।

सुखबा- ई तँ दोसर बात भेल बाबू। मुदा अचानक जे कोनो भरिगर भार कपारपर पड़ि जाइ छै तँ...।

पतिलाल- शान्तिसँ काज करबहक तँ सब चीजक रास्ता लगि जेतइ।

सुखबा- चलू बाबू। अहाँ सभ लहाश लग बैसब। ओइठाम कियो नइ छइ। दाह-संस्कारक लेल हमरा कतेक चीजक इन्तिजाम करए जाए पड़त।

पतिलाल- चलह।

(सुखबा आगू आ पाछूसँ पतिलाल आर लुतीचन विदा होइत अछि।)

q

सीन ड्रॉप।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

दृश्य- तीन

समय- दिन।

स्थान- चन्देसरक घरक एक भाग

(चौकीपर चन्देसरक लहाश अछि। एकटा औरतिया ओइठाम बैसल अछि। सुखबा, पतिलाल आ लुतीचनक प्रवेश।

(पतिलालकेँ देखते औरतिया नोर पोछैत विदा भऽ जाइत अछि।)

सुखबा- अहाँ सभ अहीठाम बैसू आ हमरा लकड़ीक इन्तिजाम करैले जाए दिअ। (कहैत विदा भऽ जाइत अछि। पतिलाल माथपर हाथ दऽ एक कातमे बैस जाइत अछि।)

लुतीचन- मन किएक दुखित करै छी। बुढ़ छेलैथ नीके भेलैन जे मरि गेला।

पतिलाल- से तँ ठीके कहै छी। मुदा पत्नी आ बेटाकेँ की जवाब देबै? ओ तँ हमरे दिस हुड़कान मारै छइ।

लुतीचन- की हुड़कान मारैए?

ISSN 2229-547X VIDEHA

पतिलाल- धुर तूँ की बुझबीही। गुड़क मारि तँ धोकड़े बुझै छइ। पत्नी कहैत रहैए जे लोककेँ केते दहेज देलकै। मुदा अहाँकेँ ठकि लेल। गछलो टका नहि देलक। अहाँ बुड़बक छी। मुरुख छी।

लुतीचन- अच्छा, सुनू एकटा बात कहै छी।

पतिलाल- कह ने रौ। कोनो उपाय लगा ने।

लुतीचन- समधीक कान दिस देखै छिऐ।

(लहाश दिस इशारा करैत)

दुनू कानमे सोनाक कनौसी अछि निकालि कऽ जेबीमे रखि लिअ। कियो ऐठाम नहि छै जे देखबो करत।

पतिलाल- बात तँ तूँ ठीके कहै छँह मुदा बुझि जेतौ तब की हएत?

लुतीचन- ऐठाम आइ केतेक लोक एतै आ जेतइ। ओइमे की पता चलतै जे के लेलक। आ जँ बेसी डर बुझाइत अछि तँ अपना गामे दिस चलि देबइ।

पतिलाल- ठीके कहै छँह। इएह अन्तिम उपाय अछि।

(उठि कऽ समधीक लहाश लग जाइत अछि।)

q

सीन ड्रॉप।

दृश्य- चारि

समय- दिन।

स्थान- चौबटिया।

(पतिलाल आ लुतीचन लफड़ल चौबटिया लग पहुँच गेल अछि। पाछूसँ सुखबा अपना दूटा गौंआँ घोंघाय आ चटपटियाक संगे प्रवेश करैत अछि।)

सुखबा- (हल्ला करैत) यौ बाबूऽऽऽ। कनी ठाढ़ रहू।

(पतिलाल आ लुतीचन ठाढ़ होइत अछि)

घोंघाय- (हकमैत) यौ किएक भागल जाइ छी?

पतिलाल- भागल कहाँ जाइ छी। हम तँ गाम जाइ छेलौं।

घोंघाय- गाम किएक जाइ छिऐ?

पतिलाल- जाइ छी गामपर सँ बेटा-पुतौहकेँ भेज देबइ। ओ सभ एता तँ दाह-संस्कारमे भागो लेता।

चटपटिया- अहाँक घरपर समाद भेज देने छी। ओ सभ अबिते हेता। अहाँ परेशान नहि होउ।

पतिलाल- परेशान केना नहि हएब। दूटा माल-जाल अछि। घर-अँगनाकेँ सुनहट छोड़नाय नीक बात हेतइ। हम जाइ छी।

चटपटिया- एकटा गप्प सुनि लिअ समधीजी तब जाएब।

पतिलाल- जल्दी कहू।

चटपटिया- केना कहब, कहितो अनोन सन लगैत अछि आ नहि कहब सेहो नहि बनतै।

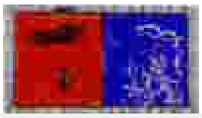
पतिलाल- सोझ मुहेँ कहू ने। जे कहैक अछि।

चटपटिया- देखियौ, अहाँ ई नहि सोचबै जे कोनो आरोप लगबै छी। ओना, कर-कुटमैतीमे एहेन बात बाजब अनुचिते होइ छइ। मुदा जँ नहि बाजी तँ आरो अनुचित। सन्देह आ शंकाकेँ साफ कऽ ली, सएह उत्तम होइ छइ।

घोंघाय- तूँ तँ तेतेक गप्पकेँ घुमा-फिरी करै छहक जे एहिसँ नीक हमरा बाजए दएह।

पतिला- हँ-हँ, अहीं बाजू।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

घोंघाय- यौ समधीजी, लहाश लग अहीं बैसल छेलौं। तखनी ओइठाम कियो नहि छेलै। सोनाक कनौसी कानमे नहि छइ। अँगनाक स्त्रीगण सभ बजैए जे समधीक कानक कानौसी अहीं निकालि लेलिऐ।

(पतिलाल चुप्पी साधने ठाढ़ अछि।)

चटपटिया- चुप रहने काज नहि चलत समधीजी। सोनाक कनौसी छेलै तँए पुछै छी। अहाँकेँ एना नहि करबाक चाही।

पतिलाल- ठीके कहै छी। हमरा एना नहि करबाक चाही। मुदा समधीजी जे हमरा संगे केलक से हुनका करबाक चाही?

(पतिलालक बेटा कंतलाल आ पुतौह फूलोदाय प्रवेश करैत अछि।)

चटपटिया- ओ तँ बेचारे स्वर्ग चलि गेला। ओ अहाँ संगे की केने छला?

पतिलाल- अखनी तक दहेजक रूपैआ जे गछौटी केने छल से बॉंकीए अछि। ओना, अपने तँ दुनियेँसँ चलि गेला।

मुदा ओ रूपैआ हमरा के देत?

चटपटिया- ओ! तँए ओकरा बदलामे कानक कनौसी घींच लेलिऐ।

पतिलाल- तँ की करितौं। पत्नी आ बेटा कहैत अछि जे अहाँ मुरुख छी। बिआहमे ठका गेलौं। अहाँ मनुख नहि छी।

कंतलाल- बाबूजी, अहाँ एतेक नीचा गिर जाएब से पता नहि छल।

फूलोदाय- (पति कंतलाल दिस तकैत)

अहाँक बाबूजी पकिया आदमी अछि। जीयतक तँ बाते छोड़ू, मुइलोसँ सूइद समेत तसील लैत अछि।

कंतलाल- हुनकर सोनाक कनौसी अपास कऽ दियौ। आब ऐ विषयमे हम कहियो नहि बजब।

पतिलाल- ठीके छै, जखन तोरो वएह विचार छौ तँ वापस कऽ दइ छिऐ।

(पतिलाल सोनाक कनौसी सुखबाक हाथमे दैत अछि।)

घोंघाय- अच्छा, आब सब गप्प छोड़ू। चलै चलू, दाह संस्कारमे।

पतिलाल- आब कोन मुहेँ ओइठाम जाएब। सोना तँ हम वापस कऽ देलौं। मुदा हमर प्रतिष्ठाक वापसी तँ नहि भऽ सकैत अछि।

फूलोदाय- चिन्ता नहि करू बाबूजी। अहाँ चलू। हमर घर-पलिवार छिऐ। हम सब बात सम्हारि लेबइ।

कंतलाल- बाबूजी, अहाँ तँ घिनेबे केलौं। सासुरमे हमरो घिना देलौं।

पतिलाल- देखियौ, जेकरा लेल कानलौं, तेकरा आँखिमे नोरे नहि। आब ऐठाम हम ठाढ़ नहि रहि सकै छी।

(तेजीसँ प्रस्थान)

q

सीन ड्रॉप।

सम्बन्ध

(एकांकी नाटक)

पात्र-

1. लखपतिया : धनक लोभी बेकती
2. जगु बौकू : लखपतियाक भाए
3. दुखनी दाय : लखपतियाक माए
4. दुलारी (छिटकीवाली) : लखपतियाक पत्नी
5. लेटरू काका : लखपतियाक ग्रामीण

ISSN 2229-547X VIDEHA

6. भुनेसर : लखपतियाक ग्रामीण
7. कमलेश : लखपतियाक ग्रामीण
8. फुलचन : लखपतियाक ग्रामीण

(किछु ग्रामीण आर चाहबला दोकानदार)

पहिल दृश्य-

समय भिनसर

(लखपतिया दरबज्जापर बैसल अछि। आगूसँ बाट धेने फुलचन जा रहल अछि।)

लखपतिया- (कनी जोरसँ सोर पाड़ैत अछि) यौ फुलचन भायऽऽऽ। एने आउ।। एगो गप्प छइ।

फुलचन- (घुमि कऽ लगमे अबैत अछि।) हँ, कहू की बात?

लखपतिया- सुनै छी जे अहाँ अपना भाएकेँ हिस्सा नइ दऽ रहल छिऐ। सुनू- भाय-भैयारी महींसी सिंग, जखने जनमल तखने भिन्न। भाइक हिस्सा तँ दिअ पड़त।

फुलचन- ओहिना होइ छै आधा हिस्सा यौ। कठ काटि कऽ सम्पैत बँचौने छिऐ। ओहिना बँचल छै, धन-सम्पैत। फोकटेमे आधा हिस्सा लेतै। काज करै बेरमे बबुआनी केने घुरै छेलइ।

लखपतिया- भाइक हिस्सा मारि कऽ खेबै तँ सभ कुछ स्वाहा भऽ जाएत।

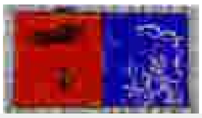
फुलचन- देबै हिस्सा। कहियौ, पहिने महाजनक सभटा पुरना करजा आपस कऽ देतै तब आधा हिस्सा लेत।

लखपतिया- ओ कहै छल जे अहाँ अपना सार आ पत्नीक बेमारीमे सभटा करजा उठौने छिऐ, तखन तँ ओइ करजाक भार अहाँक उठबए पड़त ने।

फुलचन- हे बेसी लबर-लबर नहि करू। अहाँक ओकरासँ दोस्ती अछि तँए ओकरा दिससँ बजै छिऐ। खुलि कऽ खेलाउ ने।

लखपतिया- ई मिलानबला गप्प नहि भेल। एनामे दुनू भाँइमे लड़ाइ-झगड़ा भऽ जाएत।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

फुलचन- हमरासँ लड़ाइ करत। हमरा सोझामे एहेन गप्प बजत तँ सारकेँ खून कऽ देबइ। देखै छी- जे के आबै छै, ओकरा दिससँ। जे एतै तेकरो छोड़बै नहि।

लखपतिया- ईमान-धरम सभ खतम कऽ देबइ?

फुलचन- इह, हमरा ईमान-धरम सिखबै छैथ। अपना भाइकेँ दशा बिगाड़ि कऽ भगा देलखिन से मन नहि छैन।

(फुलचन फानि कऽ विदा भऽ जाइत अछि।)

q

सीन ड्रॉप।

दोसर दृश्य-

स्थान : गामक चौबटियापर चाहक दोकान।

(भुनेसर, कमलेश, फुलचन, आर किछु ग्रामीण सभ चाहकदोकानपर बैसल अछि।)

(लेटरू काका संगे बौकू अबैत अछि।)

लेटरू काका- (बौकूकेँ हाथसँ झोरा लैत)

अपना गामपर आबि गेलौं। अहाँ पियासल छी, पहिने कलपर जा कऽ पानि पी लिअ, तब घर दिस जाएब।

(बौकू पानि पिबैले जाइत अछि।)

भुनसेर- लेटरू काका, ओ के छी यौ?

लेटरू काका- नहि चिन्हलहक। लखपतियाक भाए बौकू छिऐ।

(लखपतियाक नाम सुनिते फुलचन लगमे आबि ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)

भुनेसर- एकर तँ चेहरे दोसर रंग भऽ गेलइ।

लेटरू काका- हँ, कहै छैलै जे दू बरिस पहिने बस एक्सीडेन्टमे घायल भऽ गेल छल। मुहँमे बेसी चोट लगलै तँए एना भऽ गेलइ।

भुनेसर- ई तँ आठ-दस बरिस पहिने निपत्ता भऽ गेल छेलए। फेर केना आबि गेल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

कमलेश- अहाँकेँ केतए भेँट भऽ गेल?

लेटरू काका- भोरमे दूध बेच कऽ आबै छेलौं। ई टीसन लग रस्ताकातमे ठाढ़ भऽ कऽ अपना गाम दिस ताकै छल। हमरा देखते पएर छानि कऽ कानए लगल। पहिने तँ हमहूँ अकबका गेलौं। मुदा पैछला सभ गप्प कहलक तब चिन्ह गेलिऐ।

कमलेश- ई बौक तँ नहि अछि। फेर एकरा बौकू किए कहै छिऐ?

लेटरू काका- नाम तँ एकर जगू छिऐ। मुदा ई बचपनेसँ कनी मतिछिन्नू जकाँ करै छेलै, जे काज करै से करिते रहि जाइ। नहि कोनो काज रहै तँ चुप्पी लाधि कऽ बैस जाए आ घन्टो बजबे ने करए, तँए बौकू नाम पड़ि गेलइ। अहाँ बाहरसँ आएल छी तँए नहि बुझल अछि।

(हाथ-मुँह पोछैत बौकू आबैत अछि। बेरा-बेरी सभकेँ गोड़ लागि, कल जोड़ने ठाढ़ होइत अछि।)

बौकू- यौ काका, यौ भैया, अहाँ सभक बड़ मन पड़ै छल। माइक मन पड़िते असगरमे खूब कानै छेलौं। नहि रहल गेल तँ अहाँ सभक दरशन करैले चलि एलौं।

कमलेश- हौ एतेक दिनसँ केतए छेलहक?

बौकू- भेट गेल छला एक सन्त भगवान। हुनके सेवा-टहलमे समए काटए लगलौं।

ISSN 2229-547X VIDEHA

फुलचन- आब ऐठाम रहबहक आकि फेर चलि जेबहक?

बौकू- एलौं तँ भैयासँ भेँट करैले। ओ जँ राखि लेता तँ रहि जाएब।

फुलचन- हँ कहै तँ छहक ठीके। ओ तँ बुझहक रावणे छिआ। समाजोमे सभसँ अलगे रहै छैथ। केकरो बात सुनत थोड़े।

भुनेसर- ओइ बेर रूपैआ चोरौने रहै ओकरे सार आ मारि-पीट कऽ बौकाकेँ गामसँ भगा देलकै। लोक कहैत-कहैत थेथर भऽ गेल मुदा ओ केकरो बात नइ मानलक।

(लखपतियाक पत्नी छिटकीवाली ओही बाटे जा रहल अछि। ओकरापर सबहक नजैर पड़ैत अछि।)

फुलचन- हे यौ, छिटकीवाली घर दिस जा रहल छइ। कहि दियौ ने जे तोहर हेरेलहा दिअर आबि गेलौ। अँगना नेने जेतइ।

भुनेसर- हँ यौ, ठीके कहै छिऐ। लखपतियाक पत्नी छिटकीवालीए छिऐ।

(छिटकीवाली मुँह घुमा कऽ देखैत अछि आ तेजीसँ विदा भऽ जाइत अछि।)

फुलचन- तखैनसँ कहै छेलौं तँ सुनबे ने केलिऐ।

भुनेसर- आब लेटरू काकाकैँ नेने जाए पड़तै।

लेटरू काका- ओ बाघ छिऐ जे हमरा खा लेतइ। चलू, बौकू, अहाँकैँ अँगना पहुँचा दइ छी।

(लेटरू काकाकैँ संगे बौकू प्रस्थान करैत अछि। पाछूसँ सभ विदा भऽ जाइत अछि।)

q

सीन ड्रॉप।

तेसर दृश्य-

स्थान- लखपतियाक दरबज्जा।

(लखपतिया दुआरिपर बैसल अछि।)

छिटकीवाली- अहाँ दुआरिपर बैसल छिऐ आ ओनए अहाँपर काल बरिस रहल अछि।

लखपतिया- की भेलै? केतए काल बरिस रहल छइ?

छिटकीवाली- अहाँक हेरेलहा भाए भेट गेल। चाहक दोकानपर लेटरू काका आ फुलचन भैयाक संग फुसराहैट करैए।

लखपतिया- अँए, ई केना भेलइ!

छिटकीवाली- अहिना घरमे घेंसिया कऽ पड़ल रहू आ देखैत रहियौ। सभ सम्पैत बाँटि कऽ बेच-बिकैन देत।

लखपतिया- हम बुझै छिऐ। सभटा खेला फुलचनमाक लगौल छिऐ। अखैने तँ हमरासँ बकटेंटी केलक। ओनए खेला लगौने छल।

छिटकीवाली- कहैत रहै छी तँ बाते ने बुझैत रहै छिऐ। सभ दुश्मनी कऽ रहल अछि, अहाँसँ।

लखपतिया- अच्छा, अहाँ सिरिफ माएकेँ सम्हारने रहब। नहि होइए तँ ओकरा केतौ दोसरठाम पठा दियौ। अहाँ अपना भाएकेँ कहियौ तैयार रहैले आ हमर लाठी नेने आउ। पहिने सोझा तँ आबए दियौ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

(लेटरू काका संगे बौकूक प्रवेश।)

लेटरू काका- यौ, अहाँक बौकू टीशनपर भेटल। बाटपर ठाढ़ भऽ कऽ अपने टोल दिस तकै छल। संगे नेने एलौं।

(बौकू गोड़ लगबाक लेल लखपतिया दिस बढ़ैत अछि। बौकूकेँ लखपतिया ठेल दैत अछि।)

लखपतिया- लगमे सँ हट। भाग ऐठामसँ।

बौकू- भैयाऽऽ। हम बौकू छी।

लखपतिया- फेर चुप, भाइक नाम नहिले। हम सभटा छल-प्रपंच बुझै छिऐ। दुश्मन सभ मिलि कऽ खेला लगौने अछि। हमर भाए तँ कहिया ने मरि गेल।

बौकू- एहेन बात नहि बाजू यौ भैया। अहाँक बड़ यादि आबै छल। माइक मोन पड़िते कलेजामे सान्हि मारए लगै छल। तँए भेँट करैले आबि गेलौं।

(एका-एकी फुलचन, कमलेश, भुनेसर आबि जाइत अछि।)

लखपतिया- रे धोखेबाज, हम सभटा बुझै छियौ। हमरा सम्पैतकेँ बाँटैले तोरा लाओल गेलौ। तूँ हमर भाए नहि बररूपिया छैँ। कहै छियौ, भागि जो हमरा सोझासँ।

लेटरू काका- हे यौ लाखोजी, सुनू ई अहींक भाए छी। पैछला गप्प आ गामक बितलाहा घटना सभक बारेमे पुछि लियौ। अपने पता लागि जाएत। ई तँ एक्सीडेन्टक कारणे चेहरा कनी बदलल छइ।

लखपतिया- हमरा सिखबै छी अहाँ। पैछला सभ बात बुझा-सुझा कऽ एकरा नाटक करबाक लेल अनने छिऐ।

लेटरू काका- हमरापर झूठ-फूसक दोख नहि लगाउ। भाए छी अहाँक आ बात सुनब हम।

लखपतिया- फेर, भाएबला बात बजिते छी।

बौकू- यौ भैया, रूपैआ चोरौने रहै अहाँक सार आ दगनीसँ दागि कऽ भगा देलिऐ हमरा। सेहो दाग हमरा देहपर अखनी तक अछि। बिसबास नइ होइए तँ देख लियौ।

(देह परहक दाग देखबैत अछि।)

लखपतिया- देखबै की। हमर भाए मरि गेल। ओकर अन्तिम क्रिया-करम कऽ देलिऐ।

(लखपतियाक माए दुखनी कानैत प्रवेश करैत अछि आ दौड़ कऽ बौकूसँ लिपैट जाइत अछि।)

ISSN 2229-547X VIDEHA

दुखनी- रौ बौआ, रौ बौआऽऽऽ। एते दिन केतए रही रौ बौआ। कोन-कोन देवता-पितरकेँ कौबला केलिऐ रौ बौआऽऽऽ।

(बौकू आ दुखनी एक-दोसरसँ घेंट जोड़ि कऽ जार-बेजार कानि रहल अछि।)

बौकू- माए गै माएऽऽऽ। तोहर सुरता कहियो ने बिसरलियौ गइ। रहि-रहि कलेजामे सान्हि मारै छेलौ। तोरासँ भेँट करैले आबए पड़लौ। तोरासँ मिल लेलियौ। आब मनक सन्ताप मेटा गेल।

दुखनी- नहि रौ बौआ। आब तोरा केतौ नइ जाए देबौ रौ बौआ।

(लखपतिया हाथमे लाठी लैत छिटकीवालीकेँ इशारा करैत अछि।)

लखपतिया- छिटकीवाली, माएकेँ ऐठामसँ अँगना लऽ जाउ। ई बुढ़िया नाटक बेसी करैत अछि। घरमे बन्न कऽ कऽ एकरा मुँहकेँ थुड़ि दियौ। देखै छी की, एकरा घिसिया कऽ लऽ जाउ। आ लगाउ मुक्का-थप्पर।

(छिटकीवाली आगू बढ़ि दुखनीकेँ हाथ पकैड़ घिसियाबैत अँगना लऽ जाइत अछि।)

बौकू- (कानैत स्वरमे) हमरा कारणे माएकेँ नहि मारियौ। हम जा रहल छी। फेर कहियो घुमि कऽ एमहर नइ आएब। आइसँ हमर भैयारीक सम्बन्ध टुटि गेल। (विदा भऽ जाइत अछि, मुदा फुलचन रोकैत अछि।)

फुलचन- तूँ धीरज राखह बौकू। एकरे मजाल छिऐ जे ई भाइक हिस्सा नइ देतै। पलिवारसँ भगा देतइ। आखिर समाज छै आकि नहि। अखैने हमरा उपदेश दऽ रहल छल आ अपना बेरमे बिसैर गेल।

बौकू- नहि यौ, आब हम नहि रहब। हम समाजकैँ परनाम करै छी। जखैन हमरा भाए हेरा गेल तँ सम्पैत आ हिस्सा लऽ कऽ की करबै। हम तँ अपना सहोदराकैँ तकैले आएल छेलौं। हमरा लेल चिन्ता नहि करू। बड़का दरबार हमरा लेल खुगल छइ।

अपना भऽ गेल सपना यौ

पराया भऽ गेल अपना यौ।

(तेजीसँ बौकूक प्रस्थान।)

(दुखनी अँगनासँ चिचियाइत अछि।

दुखनीक स्वरमे- बौआ रौऽऽऽ बौआऽऽऽ।

q

सीन ड्रॉप।

समाप्त ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-6

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग

भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम तँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

"नगीना" फिल्म केर ई नज्म जे कि मोहम्मद अजीज जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल। ई फिल्म 1986 मे रिलीज भेलै। एहिमे ऋषि कपूर, श्रीदेवी, अमरीश पुरी, प्रेम चोपड़ा आदि कलाकार छलथि।

आज कल याद कुछ और रहता नहीं
एक बस आपकी याद आने के बाद
याद आने से पहले चले आईये
और फिर जाइये जान जाने के बाद

अपनी आँखों में मुझको बसा लीजिये
अपने दिल में मेरा घर बना दीजिये
क्या करूँ दिल कहीं और लगता नहीं
प्यार में आपसे दिल लगाने के बाद

इश्क़ के मैंने कितने फ़साने सुने
हुस्न के कितने किस्से पुराने सुने
ऐसा लगता है फिर इस तरह टूट कर

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्यार हमने किया एक ज़माने के बाद

आपका नाम दिल से निकलता नहीं
दिल्लगी में कोई ज़ोर चलता नहीं
आपको भूल जाने की कोशिश भी की
और तड़पा हूँ मैं भूल जाने के बाद

पहिल आ तेसर पाँतिक मात्राक्रम अछि 212-212-212-212 तेनाहिते दोसर आ चारिम पाँतिक मात्राक्रम अछि 212-212-212-212+1 मूल मात्राक्रम अछि 212-212-212-212 मुदा उर्दूमे (मैथिलीयोमे) छूटक तौरपर अंतिम लघु मान्य छै। एकर बादक बंद सभमे पहिल तीन पाँतिक मात्राक्रम 212-212-212-212 आ चारिम पाँतिक मात्राक्रम अछि 212-212-212-212+1 एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। एहि नज्मकेँ शेरमे सेहो बदलि सकैत छी जेना निच्चा बदलल गेल छै--

आज कल याद कुछ और रहता नहीं एक बस आपकी याद आने के बाद
याद आने से पहले चले आईये और फिर जाइये जान जाने के बाद

अपनी आँखों में मुझको बसा लीजिये अपने दिल में मेरा घर बना दीजिये
क्या करूँ दिल कहीं और लगता नहीं प्यार में आपसे दिल लगाने के बाद

मतलाक दूनू पाँति मात्राक्रम छै 212-212-212-212 212-212-212-212+1 आ तकर बाद दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम छै 212-212-212-212 212-212-212-212 जे कि उर्दू सहित मैथिलियोमे छूटक तौरपर मान्य छै मने जँ एहि नज्मकेँ गजल कहल जाए ताहूमे कोनो दिक्कत नहि।

2

"अनारकली" फिल्म केर ई नज्म जे कि लता मंगेशकर जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि राजेंद्र कृष्ण। संगीतकार छथि सी.रामचंद्र। ई फिल्म 1953 मे रिलीज भेलै। एहिमे प्रदीप कुमार, बीना राय आदि कलाकार छलथि।

इस इंतेज़ार-ए-शौक को जनमों की प्यास है
इक शमा जल रही है तो वो भी उदास है

मुहब्बत ऐसी धड़कन है जो समझाई नहीं जाती
ज़ुबां पर दिल की बेचैनी कभी लाई नहीं जाती

चले आओ, चले आओ तक़ाज़ा है निगाहों का
किसी की आरज़ू ऐसे तो ठुकराई नहीं जाती

मेरे दिल ने बिछाए हैं सजदे आज राहों में
जो हालत आशिक़ी की है वो बतलाई नहीं जाती

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222-1222-1222-1222 अछि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। मुदा एहि पाँति "मेरे दिल ने बिछाए हैं सजदे आज राहों में" मे बहर टूटल छै आ शाइर एकर गजल कहियो नै रहल छथिन। बहुत काल शाइर गजल वा नज्मसँ पहिने माहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अनिवार्य नै छै। एहि नज्मसँ पहिने एकटा शेर "इस इंतेज़ार-ए-शौक को जनमों की प्यास है" माहौल बनेबाक लेल देल गेल छै।

3

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

"प्यासा" फिल्म केर ई नज्म जे कि मोहम्मद रफी जी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि साहिर लुधियानवी। संगीतकार छथि सचिन देव बर्मन। ई फिल्म 1957 मे रिलीज भेलै। एहिमे गुरू दत्त, वहीदा रहमान, माला सिन्हा आदि कलाकार छलथि। एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 122-122-122-122 अछि।

ये महलों, ये तख्तों, ये ताजों की दुनियाँ,
ये इंसाँ के दुश्मन समाजों की दुनियाँ,
ये दौलत के भूखे रवाजों की दुनियाँ,
ये दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है .

हर इक जिस्म घायल, हर इक रूह प्यासी
निगाहों में उलझन, दिलों में उदासी
ये दुनियाँ है या आलम-ए-बदहवासी
ये दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है .

यहाँ इक खिलौना है इंसाँ की हस्ती
ये बस्ती हैं मुर्दा परस्तों की बस्ती
यहाँ पर तो जीवन से है मौत सस्ती
ये दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है .

जवानी भटकती हैं बदकार बन कर
जवाँ जिस्म सजते है बाज़ार बन कर
यहाँ प्यार होता है व्योपार बन कर
ये दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है .

ये दुनियाँ जहाँ आदमी कुछ नहीं है

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

वफ़ा कुछ नहीं, दोस्ती कुछ नहीं है
जहाँ प्यार की कद्र कुछ नहीं है
ये दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है .

जला दो इसे फूक डालो ये दुनियाँ
जला दो इसे फूक डालो ये दुनियाँ
मेरे सामने से हटा लो ये दुनियाँ
तुम्हारी है तुम ही संभालो ये दुनियाँ
ये दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है

एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। "हर इक" केर मात्राक्रम लेल अलिफ-वस्लक नियम देखल जाए मने एकर मात्राक्रम "हरिक" केर हिसाबसँ लेल जेतै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३. पद्य

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

३.४. नन्द विलासराय- दहेज

संतोष कुमार राय दू टा कविता

1.गाल पर थप्पड़

अन्याय कैँ खिलाफ बाजला पर
गाल पर पड़ल थप्पड़
मारबाक धमकी भेटल
इएह छियैय दुनिया।

समाजक दु:ख-दर्द कैँ
दूर करबा मे पाँछा रहनिहार
मुँह पर पुरुख बनवाक लेल फिरिशान छथि
नीक लोकनि कैँ बदनाम करैत छथि।

एकटा नव चुनौती अछि आब
जीनगी लेल की करू-
छुतहर घैल हम थोड़े छी ?
हम दलित बनाउल गेल छी।

2. साहित्य मे भिनभिनौज

चुप रहला सँ आओर गड़बड़ होएत

अकादमी सँ लsकs गाम-घर तक

इ हल्ला भs रहल छै

पुरूस्कार मे घोटाला भेल छै।

साहित्य मे गोंधियागिरी भ रहल छै

जमीन-जायदाद जँका बाँट-बखरा

गुहाँ-गिज्जर भs रहल छै

भs रहल छै साहित्य मे भिनभिनौज ।

इ नीक नहि कहल जा सकैए

'बेटखौकी' झगड़ा-झंझट विद्यापति समारोह मे

मूल्यहीन राजनीति कँ छकरबाजी

साहित्यक धरोहर लेल सबको कुछ करबाक अछि।

मीठगर गप हमरा फिरिशान केने अछि

चमचागिरी सँ देश बिकायल

आबो ज्ञान करबाक चाही

फेर नहि तँ गुहाँ-गिज्जर लिखले अछि।

संतोष कुमार राय 'बटोही'

ग्राम- मंगरौना

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पोस्ट- गोनौली

भाया-अंधराठाढ़ी

अनुमंडल- झंझारपुर

जिला-मधुबनी

बिहार-847401

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रामविलास साहु

टनका

ज्ञानक खान
समाजक दर्पण
साहित्य अछि
अमृतक खजाना
पढ़ि बनू विद्वान

श्रेष्ठ साहित्य
सागरसँ गहींर
गोंता लगाऊ
जिनगी बदलत
भेटत आत्म ज्ञान

भाषा ज्ञानक
जननी कर्मभूमि
देशक मान
जनगण कल्याण

विकासक निर्माण

मधुर भाषा
सभक मन जीत
उच्च आसन
सम्मान दियाबैए
दुखसँ बँचबैए

मनक मैल
विचार बदलैए
समाज देश
दुनूकेँ बिगाड़ैए
मन रोग बढ़ा कऽ

मनक मैल
छबिकेँ बिगाड़ैए
जनहित नै
स्वार्थी बनबैए
कुबाट चलबैए

अमृत वाणी
जनहित करैए
नदीक पानि
शीतल, नहि हानि
पोखैर राखै मान

जन्मदातासँ
पालनकर्त्ता पैघ

ISSN 2229-547X VIDEHA

मारैबलासँ
बँचबैबला श्रेष्ठ
जन्मभूमिसँ के छी?

माता कुमाता
कहियो ने होइए
पिता पुत्रक
हत्यारा नै होइए
कहै छैथ विद्वान

कर्मयोगीकेँ
भोगी निर्वल कहि
जोंक बनि कऽ
हकमारी करैए
उन्टे नर्क भेजैए

श्रमशीलकेँ
लोक हीन बुझैए
हिस्सा लूटि कऽ
भोगी जोगी खाइए
स्वार्थ सिद्ध करैए

परिश्रमक
मोल अनमोल छै
नै बिकै तौल
जे जानैए ई मोल
से जन ज्ञानी होय

ISSN 2229-547X VIDEHA

दुख सहैले
गरीब जनमैए
सुख भोगैले
भोगी ठग महंथ
तियागी संत अछि

असल सन्त
जनहित करैए
सुर, तुलसी
कबीर, रैयदास
चारू युगक दास

सत्यक वाणि
नै होइए उवाणि
हेतै कुवाणि
धर्मकँ हेतै हानि
बढ़ि जेतै अज्ञान

बाट बटोही
संग मिलि चलैए
एक थकैए
दोसर अछि थीर
के होइए अधीर

चोर कहियो
इजोत नै सहैए

भोगी कहियो
दुख नहि सकैए
के भोगत ई दुख?

मनक शान्ति
साहित्यसँ भेटैए
राष्ट्र निर्माण
समाज कल्याण-ले
ज्ञानी बाँटैए ज्ञान

असल प्रेम
साहित्यसँ करियौ
ज्ञान बढ़त
समाज सुधरत
सुख शान्ति भेटत

बिनु बजने
लोक बुझत केना
जँ बाजै छी तँ
होइए नकीहानि
उन्टे जाइए जान

बरसु मेघ
एहि बाग-बोनमे
पानिक त्रास
बेसी बनि गेल-ए
खेत सुखि जरैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

रूसल मेघ
मन नहि मानए
मानत केना
जखैन बरसत
तखने ने बिश्वास

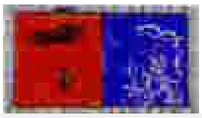
मेध देख
मन हरिया गेल
जे गरजत
से बरसत नहि
केना बँचत प्राण

जे गरजैए
से नहि बरसैए
चुप्पे रहने
खेत बाग जरैए
प्यासे लोक मरैए

लोक कहैए
इंसान पत्थरसँ
कम नै अछि
अखनो तँ विवेक
बुझू मरले अछि

कहै लेल तँ
विवेक मरल-ए
मुदा कठोर
इंसान जगलासँ
आतंक तँ बढ़ैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

किए इंसान
लूट हत्या करैए
रावण कंस
बनि खून पीबैए
इमान की कहैए?

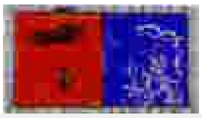
एते निष्ठुर
मनुख किए भेल
दुश्मन बनि
मनुखे मनुखक
हत्यारा बनि गेल

धरती डोलि
कानि-कानि कहैए
सभ डरल
सामन्तक जड़िमे
आतंक जनमल

जवाब देतै
सहए तँ दोषी छै
चुप्पी सधने
मुँह सीने रहै छै
दीन दुख सहै छै

जे जनमल
एक दिन मरत
किए होइए
लोभी स्वीर्थेअधीर

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जगत अछि धीर

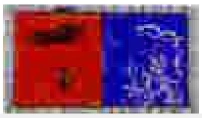
सोच बदैल
नेक इंसान बनु
घिनौना काज
छोड़ि कल्याण करू
हेतै नव निर्माण

सत्यक बाट
चलए जँ इंसान
आगू बढ़ैत
आगि नहि पकत
नहि पानि सड़त

कर्मकेँ छोड़ि
लोक धर्म खोजैए
भवलोकमे
भगवान खोजैए
नर्क भोग भोगैए

हारल दिल
थाकल तन मन
अकैर गेल
जिनगी अगहए
जगत छुटि गेल

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मनक मैल
नै छुटल तीर्थसँ
स्वर्ग खोजैमे
मरणासन भेल
कर्त्तव्यक खेलमे

मोह बन्धन
फँसि वौआए गेलौं
बाट भुलि कऽ
लक्ष्यहीन बनलौं
आडम्बर देख कऽ

ठगक मेला
पाखण्डीक दोकान
सज्जन जन
पाप कीनै-बेचैए
पुण्य-पापक खान

अपन बात
लोक दाबि रखैए
अपन दुख
अपनेसँ सिरैज
ओझरा कऽ मरैए

स्वर्ग कहि कऽ
गामकेँ लजबैए
नहि सुविधा
सड़क बिजलीक
खेती पछारू अछि

गाम छोड़ि कऽ
परदेशिया बनि
खटैए लोक
गाममे नै उद्योग
पेटक समस्या-ए

सभक पेट
भरैबला मरैए
भुखले पेट
धिया-पुता बिलैट
अनाथ बनल-ए

कहै लेल तँ
रीढ़ अछि किसान
मुदा जीवन
देखू बेवस्था खेल
खेती चौपट्ट भेल

उत्तम खेती
कहैबला नै कियो
साधनहीन
खेतीक काज भारी
माथ पीटै किसान

मरि जीबि कऽ
किसान खेती करै
खा गेल रौदी
धिया-पुता कनैए
भुखै साँझ-विहान

केना बँचत
इज्जत आ आबरू
नहि सुरक्षा
दिन अपहरण
राति हत्या होइए

देश अजाद
मुदा खेती उद्योग
नै सुधरल
नै भेटल सुविद्या
की करत विधाता

गामक गाम
खाए सुते बलान
बालुक ढेर
उड़बै आसमान
केना बँचत प्राण

कोसी बलान
कमलामे उफान
एलै तूफान

भँसिया गेल गाम
मरल स्वाभिमान

विकराल छै
कोसीक बाढ़ि-पानि
पेटे समेलै
गाम-घर-दलान
लाखक गेल जान

कोसी त्रासदी
विकराल निर्मम
तांडव नृत्य
महाकाल बनल
धोइ पोछि खेलक

लूटेरा सभ
मिलि माल खेलक
शोषण हत्या
नारीजनकँ भेल
बच्चा दहए गेल

धनक क्षति
जनक मति गेल
देखैबला नै
डुमि मरल बच्चा
गाम भेल निपत्ता

प्रकृति कहि

ISSN 2229-547X VIDEHA

चेतबैए लोककेँ
अचरज नै
प्रदूषित धरती
जहर उगलैए

देख प्रकृति
चेतावनी दइए
धरती पानि
हवा प्रदूषित भऽ
संकट छै जीवक

पावस रीतु
अमाबस राति छी
मेघ बरसै
बाढ़िमे डुमैत छी
के बँचेतै हमरा

मेघ बरसै
पुरबा झाँट बहै
गरैज कहै
आइ नहि अखने
जलमग्न करब

झरझराति
जे झरनाक पानि
बहि कहैए
हिम्मत नै हारू
चलु लक्षक ओर

ठरल पानि
देहकँ सिहराबै
झील झरना
सजि शोभा बढ़बै
जगत सुख पाबै

पानि बरैस
मेघ करै कल्याण
जीव रक्षा-ले
झील झरना नदी
भरि करै भण्डार

बिनु श्रम नै
जगतमे सजैए
समाज देश
खेतसँ खरिहॉन
सभकँ राखै मान

इज्जतदार
ने इज्जत खोजैए
बेइमान तँ
बेच खाए गेल, जे
हुनका की कहबै?

अहिंसा छोड़ि
लोक हिंसा करैए
मानव गुण

जनु अन्त होइए
दानवे रूप मानु

हिंसा छोड़ि
अहिंसा अपनाऊ
अमन चैन
सुख शान्तिसँ जीबू
हेतै सभकैँ कल्याण

हिंसा छोड़ि कऽ
अहिंसा पथ चलु
हेतै कल्याण
लोक सुखी हेतै तँ
हेतै देश विकास

तियागी बनि
देशक सेवा करू
सर्वहितसँ
जनता खुश हेतै
गर्वित हेतै देश

बलिदानक
देश अछि भारत
माटि-पानि छै
उपजाऊ अमृत
कर्मवीरक स्थान

अपन हित

सुख सभ चाहैए
अनका लेल
काँट कीए रोपैए
कर्म छोड़ि चलैए

लोकक हित
कल्याण जे करैए
महामानव
जग जानि मानैए
देवतुल्य पूजैए

प्रेमक बान्ह
सभसँ मजगूत
लाख जमाना
नै मानैए तँए ने
लोक हिंसा करैए

स्वर्ग नरक
यएह धरती छी
सत्य पथकँ
पकैड़ स्वर्ग मिले
कुपथसँ नरक

के सुधारत
एहि परम्पराकेँ
नै जनमल
तियागी ने इंसान
सुतल भगवान

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

चान सुरुज
समरूप सभक
बेवस्था किए
दू रंग बनल-ए
ऊँच-नीच देखैए

मरुस्थलमे
बरखा नै होइ छै
दृष्टिहीन नै
जग देख हँसै छै
के अमृत लूटै छै

शीशाक दिल
एक्के धक्का जँ जुटै
दुख सहैत
गरीब कठोर भऽ
पत्थर सन जे छै

पियास बुझै
पानिसँ, खूनसँ जे
त्रास मिटबे
की सत्य अहिंसासँ
मिटत ई पियास?

भ्रष्टाचारकँ
जे सौरि उखारत

तेकरे नाम
अमर हेतै देश
पैर पूजतै लोक

बढ़ चौंसठ
एहेन घूसखोर
भ्रष्टाचारकेँ
जे पनाह दइ छै
की देशद्रोही नै छै

हाथो-हाथ जे
काज करि लोककेँ
हजार, लाख
ऑफिसमे मांगै छै
की भ्रष्टाचारी नै छै

उचित लेल
जे जान गमबै छै
सर्वहितक
कल्याण करैत छै
असली मसीहा छै

मान प्रतिष्ठा
सँ बढ़ि संसारमे
किछु नहि छै
कर्म, धैर्य, संतोख
जगत इजोत छै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मन मन्दिर
घर तीर्थ समान
माए-बापक
सेवासँ बढ़ि नै छै
जगमे कोनो काज

घूसखोरकेँ
की कोनो नाँगैर छै
इमान बेच
दुनियाँकेँ ठकै छै
के नरक भोगै छै?

भ्रमति मन
प्यासल मृगसन
सघन बोन
पानि बिनु तड़ैप
पटैक तेजै प्राण

मृग तृष्णामे
अज्ञानी वौआइए
भवलोकमे
घुमि तृष्णा बुझबे
नर्क भोग भोगैए

अपना लेल
दिन राति खटैए
सर्वहितक
काज नहि करैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

केना हेतै कल्याण

इमान घटि
लालच बढ़बैए
इंसान नहि
बेमान कहबैए
मरि नर्क भोगैए

मूर्खक वाणि
अग्निवाण होइए
ज्ञानीक वाणी
अमृत समान-ए
जगत कल्याणमे

देव समान
आदर मानदान
सभ खोजैए
बैस भोगी बनि कऽ
जग केना चलत?

जग अज्ञानी
देख ज्ञानी कनैए
ज्ञानक दीप
कहिया जरत जे
जग हेतै इजोत

सोच बदैल
समय-संग चलु

हेतै उत्थान
सभकेँ दियौ मौका
हेतै जग कल्याण

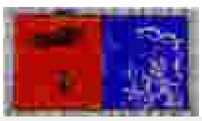
आइ तक जे
पछुआएल अछि
केना बढ़तै
करियौ ने उपाय
संग मिल चलैक

साथ मिल जा
समाज नै चलतै
केना हेतइ
समाजक विकास
जा बेवस्था नै हेतै

नियत जा नै
सभक सुधरतै
एक रंगक
समाज केना हेतै
जा दृष्टि दू रहतै

काजक बेर
पछुआएल रहै
खाइ बेरमे
कीए अगुआइ छै
की नियत ठीक छै?

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

सभक लेल
कानून अधिकार
एक रंगक
सुविधा-ले बनल
बेवहारमे दू छै

मुँह देख कऽ
मुंगबा परसै छै
मुँहदुब्बरकेँ
के जानि पुछै छइ
होइ छै मानहानि जे

केना बनतै
समतल सपाट
जाधैर नहि
उभर-खाभरकेँ
सहीट बनाएब

के सुधारत
दिशाहीन समाज
सुधारक छै
नेत्रहीन बनल
विवेक छै मरल

जे बनेलक
समाज दिशाहीन
माफी के देत

बिनु मौत मरत
पानि नै कियो देत

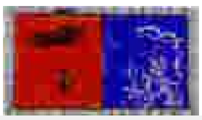
सभक सुख
छीन अपनेलक
से भोगी बनि
जगकेँ सतेलक
से नरक भोगत

जे छी दोखी से
माफी मांगि लेत तँ
क्षमा कऽ देतै
आब क्षमादान नै
मृत्युदण्डभेटतै

दुखियाकेँ जे
जानि सतबै छइ
भगवानो नै
क्षमा देत ओकरा
दुख दबि मरै छै

पक्षी जकाँ छै
मनुखक जिनगी
पेट भरैले
परिवार छोड़ि कऽ
उड़ल फिरैत छै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पापी बनि कऽ
जे जिनगी जीअल
पापक भागी
दोसर के बनत
पाप ढोति मरत

देश अजादी
केकरा-ले भेटलै
गरीबकेँ तँ
भेटलै भूखमरी
तियागक फलमे

अजाद भेलै
केकरा लेल देश
बलिदानीकेँ
की भेटलै सनेस
गरीबी, घूसखोरी

देश गरीब
अमीर केतए-सँ
धन लूटैले
अकाससँ आबि कऽ
सत्ता हथियौलक

महगी मारि
बेरोजगारी संगे
भूखमरी आ
हत्या, अपहरण
उद्योगमे भेटल

अनेकतामे
एकता कहबी छै
सभ-सभसँ
मुदा किए छुबाए
तन-मन दुनूसँ?

देशक हाल
बड़ गड़बर छै
दलमलित
छै गरीबक दिल
महगीक मारिसँ

पेट कहिया
गरीबक भरतै
की जरि जेतै
ओकर अरमान
के करतै कल्याण

कहबी रटि

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

सभ पढ़ि कहै छै
सिद्धान्त सन
मुदा काजरूपमे
मोन पतियाबै छै

बाहर साफ
अन्दर घिनाएल
बिश्वासघात
कर्म, कुकर्म संगे
नहाइ गंगाघाट

फूल फड़क
थाहे ने, रोपैइए
ताड़क गाछ
जे बढ़ि पीए ताड़ी
तेकरे दिन भारी

डाइन कहि
महिला उत्पीड़न
ओझा-गुणीक
आरोप लगबैए
वैज्ञानिक युगमे

कोन कसूर
महिला केने अछि
जिनगी भरि
शोषणक शिकार
बनि सहि जीबैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रेमक अर्थ
सभ नहि बुझैए
उनटा अर्थ
बुझि विष पीबैए
जानि बुझि मरैए

काँचक दिल
टुटि केना जुड़तै
प्रेमरससँ
सोना सन जुड़तै
नैन बीच बसतै

फूल बनि कऽ
गमगम करैत
सभक नैन
बसि दिल समेतै
गीत प्रेमक गेतै

आगि लगल
जगत जरइ छै
के मुझेतै ई
सौनक धधकैत
धधराकैं यौ भाय?

सावन मास
बुलबुल चहकै
मेघ बरसै
पिया कहिया एतै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

नयन तरसैए

धरतीक प्यास
सावन नै बुझेतै
मेघ बरैस
की करतै जखन
नयन बरसै छै

सुखल खेत
मेघ नै बरसल
नै भेल कादो
बितैए सौन भादो
बेवस्था छै बेकाबू

बरसातक
दिन आएल मुदा
झमकैआ तँ
नै बरसल मेघ
खेत केना रोपेतै

सभक हित
जे दिलसँ करतै
अमृतफल
जगतमे पाबतै
स्वर्ग किए खोजतै

पर सुख जे
छिन कऽ अपनेतै

नरक भोग
भोगि जीते मरतै
जग देख हँसतै

पानिक स्नान
तन शुद्ध करै छै
मन शुद्ध नै
सत्यकर्म ज्ञानसँ
मन शुद्ध होइ छै

तन शुद्ध तँ
सभ करै छै मुदा
मन नै कियो
जे शुद्ध दुनू करै
वएह महान छै

मधुर भाषा
कोइली बोल बोलै
कौआक भाषा
कोइली नहि सुनै
कौआ मारि भगाबै

निकटी तौल
सोना रत्न बिकै छै
नापि-तौल कऽ
चीज-वौस बिकै छै

बोली छै अनमोल

सुखक खान
धरती स्वर्ग सन
प्रदूषित भऽ
दुख सहि जीवकेँ
कल्याण करैत छै

भवलोकमे
लोक स्वर्ग खोजै छै
पृथ्वीसँ बढ़ि
नै छै तीनू लोकमे
साधनो छै उत्तम

कर्मयोगीकेँ
कर्ममे विश्वास छै
भोगवादीकेँ
रोगक चिन्ता होइ
से तियागी कहै छै

धनक शान
हाथी घोड़ा दलान
बागक शान
मोर-मोरनी नाच
तेकरो नाश तँ छै

मधुर फल
सभ खोजैत अछि

ISSN 2229-547X VIDEHA

रोपै ने गाछ
बिनु पानि बुझेतै नै
तन मनक प्यास

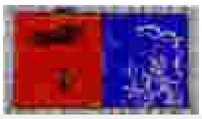
भाग्य नै सुतै
सुतै छै कर्महीन
पौरुष जागि
कर्मवीर बनै छै
जगत पूजै छइ

विष पीब कऽ
पूरबामे सुतै छै
विधाता केना
ओकरा बँचेतै जे
दुनियाँकँ देखतै

हिनभावसँ
मनोबल घटै छै
सम्पन्नतासँ
शत्रु, रोग भागै छै
दीन दुखे मरै छै

बाढ़िक पानि
धन-बल-यौवन
स्थायी नहि छै
सभ किछु छोड़ि कऽ
विद्या संगे जाइ छै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जीव जगत
बिनु जल केना कऽ
सजि जीयत
नैए आन उपाय
करू रक्षा जलकेँ

सावन-भादो
नदी उमरल छै
बाढ़ि पानिक
खतरा बढ़ल छै
गाम-धर डुमल

दीनक दुख
देनिहार बहुते
बँटनिहार
नै भेल आइ धरि
कियो नै छै इंसान

प्राणक रक्षा
केना करत लोक
जान मालक
नै छै कोनो सुरक्षा
केना बँचतै प्राण

बाढ़ि पानिक
समस्या देशक छै

केना निजात
मिलतै गरीबकैँ
डुमि मरै छै बाढ़ि

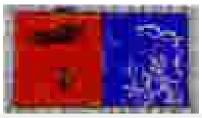
गामक गाम
दहि भँसिया गेल
नेना भुटका
बिलैट मरि गेल
बाढ़िक तांडवमे

बाढ़िक माया
नै कोनो दया-मया
धोइ पोछि कऽ
सभ किछु खेलक
निर्जन भेल गाम

दुख सहि कऽ
गरीब जीबैत छै
नै कियो बाँटै
दुखक पहाड़कैँ
गरीबे माथ पड़ै

दीनक दुख
के बाँटि कऽ हरतै
सुख छोड़ि कऽ
आनक बलाए कैँ
अपना माथ लेतै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

माटि उखाड़ि
खेत जोते किसान
चौकी मारि कऽ
बीज बुनि सुतारि
उपजे धनसारि

खेती करैए
किसान मजदूर
माल मारैए
बनियाँ आ बेपारी
चिन्तामे छै दलाल

सरकारक
मौन चुप्पी देख कऽ
सभ जनता
बनल-ए लचार
महगीक शिकार

भूखल पेट
धियापुता कानैए
साँझ-विहान
महगी मारि सहि
सुते साँझे किसान

नै रोजगार
दुनू हाथ बेकाम
आँखिक नोर

बहैए धार सन
केना बँचत प्राण

रोटी कपड़ा
मकान शिक्षा स्वास्थ
कहबी सन
सभ करैए लूट
केना भेटत सुख

माल टलिया
मालदार बनल
देखकँ लूटि
दलाल बनल-ए
भुखे मरैए दीन

चोरक माल
सरदारे बाँटैए
चोरक माथ
चढ़ि खेल देखैए
फाँसी चढ़ैए चोर

सुख दुखक
खेल खेलै खेलाड़ी
पुण्य लूटाए
शैतान अधिकारी
माल खाए मदारी

अपन दोष

गुणे-गुण देखैए
आनक दोष
वियादोसँ विषाह
चालैन दुसै सूप

सभ खोजै छै
सखुआ सागवान
बेल बगूर
कियो ने खोजै जानि
गम्हारि बीचमानि

सुखल डारि
कियो ने पकड़ैए
सभ खोजैए
हरियरका डारि
तइयो अछि हानि

फलक चिन्ता
करि सभ मरैए
कर्मक चिन्ता
कियो नहि करैए
फलामृत नै होय

बाट छोड़ि
बटोही भटकैए
आँखि रहितो

आन्हर बनल-ए
क्षणे प्राण गंबैए

मोह ममता
फँसि सभ मरैए
तैयो तँ लोक
भवलोक घुमैए
नर्क भोग भोगैए

समय छोड़ि
जे काज करैत छै
अपनाकेँ ओ
चतुर समझैए
ओझरीमे मरैए

हवा पानिकेँ
नै कोनो अछि डर
बिहाड़ि बाढ़ि
क्षणेमे बिगाड़ैए
लइए जानि प्राण

ठढ़िया साग
ठाढ़ बाड़ी रहैए
गेनहारी तँ
चतुर गिरथानि
पोरो धेने मचान

अण्डीक खुट्टा

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

बधण्डीक छै ठाठ
सण्ठीक टाट
मनेजरक खाट
एके धक्का दू फॉंक

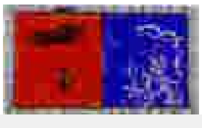
परबुधिया
बेटा जखने भेल
सभ संकट
तखने आबि गेल
बुधियो हरा गेल

परबुधिकेँ
नै चलु आगू-पाछू
मति-कुमति
तखने बनि जाएत
दुख घर आएत

सप्पत दै छी
राखू प्रेमक मान
नै तँ दऽ देब
अहाँक विरोगमे
हम अपन जान

झीसी झीसिया
फुहार पड़ै छइ
फूही फूहिया
थलकीचार बनि
भादो कादो होइए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

समै मेघौन
सावन कहबैए
घनघनौआ
बर्खा भादो होइए
पानि बाढ़ि लाबैए

कसूर केलौं
खेतीहर बनलौं
शोक भेटल
गरीबीक संताप
छाती पीटि मरै छी

सुख-चौन जे
हाथसँ छुटि गेल
अपन काज
बेरोजगार भेने
होइ छी अपमान

काज छुटने
सोभिमान मरल
केना कहब
बेथा दुखक बात
केना जीएब आब

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

संकटमे छै
किसानक जिनगी
पुछनिहार
नै बँचल छै कियो
मुक्ति केना भेटतै

सभ विपदा
खेतीहर सहैए
केना चलतै
महगी मारि भारी
धूरी टुटल गाड़ी

मरितो क्षण
चिड़ै उपकारी छी
तइयो किए
लोक शिकार करि
संसार छोड़बै छी

पानि बहतै
पनिबटे ससैर
नै हेतै हानि
जँ बान्हबै बान्ह तँ
पानि करतै हानि

दीन दुखीकेँ
उपकार करियौ
हेतै कल्याण

ISSN 2229-547X VIDEHA

मिलतै जीवन
काज हेतै महान्

खुशबू दैत
फूल हँसि कहैए
हम छी प्रेमी
प्रकृति जगतकेँ
प्रेमी बनु हमर

सूरत देख
जगत लुभाइए
सुगन्ध पाबि
हमरा हत्या करि
अत्याचार करैए

सुन्दरता छी
मात्र देखैक चीज
छुबैक नै छी
छुबै तँ प्रेमी नै छी
दिलकेँ दुखबै छी

अघोरकाल
महा विकराल-ए
बेटा-बापक
दुश्मन बनल-ए
देख जग कानैए

पूर्वाग्रहसँ

सभ ग्रसित अछि
दुटत केना
एहि बाटसँ मुक्ति
जड़िमे अन्धभक्ति

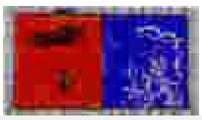
दूध फूल नै
छुबाइ छै किनको
जाति भेदसँ
तनमन किएक
पूर्वेसँ छुबाइए

कसूरदार
बहुत छै जगतमे
इमानदार
केकरा कहबै यौ
के चढ़तै फाँसी यौ

आपसी भेद
मतभेद बनि कऽ
भेदिया वेद
कुभेद पढ़ि-पढ़ि
समाजकेँ तोड़ैए

दिलक बात
नै केकरो कहियो
जानि करत
तखने नकीहानि
समैझ राखु मान

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कूदैक चिड़ै
मधुर गीत गाबै
पंख पसारि
अकासमे उड़ै छै
दुख-सुख सहै छै

कोइली सुग्गा
मोर पपीहा गाबै
उपदेशक
बगुला भगत छै
मैना छै बजनियाँ

आएल सौन
उमैर गेल मेघ
नाचे मयूर
बेंग संगीत भरै
कोइली गाबै गीत

मेघ बरैस
धरतीकेँ सींचै छै
गरैज मेघ
किसानकेँ जगाबै
पानि संवारै चास

खेतीक काज
सभसँ उत्तम छै

ISSN 2229-547X VIDEHA

बिनु साधन
बड़ दुखदायी छै
नै केने, नै बनै छै

पाँच महल
दस दरबाजा छै
पाँच मंत्री
दू चोर, दू सिपाही
काया बीच प्राण छै

घुमि देखलौं
अचरज दुलफी
छोटका झाड़
फूल ऊपर पत्ता
ज्वर करै निपत्ता।

भूख जगबै
पित्त नाश करै छै
दुलफी पत्ता
छोट उज्जर फूल
भेटै खेत उसर

लत्ती लतैर
बेधने रहै गाछ
एक्को नै पत्ता
अमरलत्ती कहि
दुनियाँ पुकारै छै

कठजीबी छै
लत्ती-अमरलत्ती
गुण भरल
औषध कहबै छै
परजीबी होइ छै

चर्म रोगक
असल दवाइ छै
अमरलत्ती
ज्योतिकेँ बढ़बै छै
खून साफ करै छै

यौवन पाबि
जानि नै इतराउ
चारि दिनक
चाँदनी राति औत
फेर अन्हार राति

प्रेम ने छीपै
दुनियाँ छीपबैसँ
प्यास नै बुझै
ओसकेँ चाटनेसँ
दिलमे बसै प्रेम

प्रेमक रस
सभ रससँ मीठ
के पीएत ई
सभ डुमल अछि

सोमरस पीबैमे

मन कहैए
अमृत पीब लेतौ
आनब केना
जे रस पीबि मीरा
मोक्ष धाम पौलक

रसक खान
दुनियाँमे छिपल
खोजैबलाकेँ
सभ दिन कमी छै
तेँ दुर्लभ कहै छै

पर्यटककेँ
अपार संभावना
मिथिलामे छै
स्थलक विकाससँ
खुशहाली आनत

मिथिला अछि
पौराणिक स्थलक
गाम, धामक
तीर्थ स्थल अखनो
कर्मभूमि सेहो छी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कर्मभूमिसँ
बढ़ि नै स्वर्ग भूमि
हमरा चाही
कर्मभूमि आ रणभूमि,
नै चाही स्वर्गभूमि

इतिहास छै
मिथिलाक पुराण
पवित्र धाम
स्वर्गसन धरती
देवो करैए मान

जग जानैए
मिथिला धरतीकँ
हवा पानि तँ
अमृत सन अछि
राखै जगमे मान

अमृत पानि
नदी झरना बहि
मिथिला गाम
सुखक खान अछि
अन्न, फलक भूमि

बाँटि देलक
मिथिला समाजकँ

किछु सामन्ती
अपन स्वार्थ लेल
मुदा माफी के देतै

समाज मिलि
दहेज कैंसरकैँ
मारि भगाउ
मानवताकैँ राखू
सभक हेतै हित

दहेज छीऐ
समाजक कलंक
केना मिटत
ई दानव-दहेज
की नारी छी कलंक

केना भागत
दहेजक कुलीला
लालची लोक
करैए कठखेल
जे मरैए महिला

घृणित काज
समाजमे होइए
अपमानित
नारी हत्या होइए
केना चलत सृष्टि?

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

छूआ-छूत छै
समाजक समस्या
केना मिटत
संक्रमणक रोग
की छीऐ मनरोग

शुद्ध मने नै
सड़ैन पकड़ने
जड़ियाएल-ए
दिल बेमान सेहो
तैँ करैए अन्याय

छूतहा रोग
किछु लोककैँ धेने
सभटा सुख
हमरेटा भेटए
बाँकी भाँड़मे जाए

असंतोष-ए
मनुखमे घुसल
कहिया हेतै
ई रोगक निदान
जे हेतै सर्वहित

भेद रचि कऽ
समाज बाँटि काटि
अपना लेल

ISSN 2229-547X VIDEHA

बेसी सुख चाहैए
दुख दर्द के लेतै?

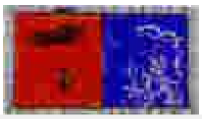
निमन फड़
लइले मारि करै
सड़लहाकेँ
के लेतै जानि मानि
केकरो हेतै हानि

माफ करियौ
कहल सुनलकेँ
सुखक खान
बिनु कर्म नै भेटै
कालक पहरा छै

योद्धा मारैए
तीरसँ, ज्ञानी मारै
ज्ञान सम्मान
मूर्ख मारै शूलसँ
जे जाने से चतुर

बिनु दागल
केना पहचानत
सभ छै ज्ञानी
नै छै कोइ अज्ञानी
तेँ छै ई किरदानी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मूर्ख रहितो
महामूर्खकेँ खोजे
सभ भेटैए
ज्ञानी, संत, विद्वान
पढ़ै वेद पुराण

सोचि करू जे
सर्वहितक हेतै
वदनाम छै
त्यागी, संयासी सन्त
जे छिपाएल नै छै

किछु लोकक
काज बदनाम छै
जग जानै छै
बौक आन्हर बनि
मूर्ति जकाँ देखै छै

संकीर्ण सोच
शैतानक होइए
कपटी दिल
बेमानक होइए
संतक दिल साफ

पढ़ल ज्ञानी
अनपढ़ अज्ञानी
के छै अंजान

जे ठकि कऽ खाइए
से चतुर सियान

ठककेँ ठकि
खाइमे नैए हानि
सभ चतुर
अपनाकेँ बुझैए
तइयो ठकाइए

ठककेँ लोक
ठकहरबा कहि
दस लोकमे
बदनाम करैए
दागीकेँ की कहबै

जे आइ धरि
किछु नहि केलक
करैबलाकेँ
दुखे-दुख देलक
माल चापि खेलक

जोंक बनि जे
जानि खून पीलक
दुख देलक
दीनकेँ सतेलक
केना मुँह देखेतै

ISSN 2229-547X VIDEHA

कर जोड़ि कऽ
विनती जे केलक
तेकरे दुख
दागी मिलि देलक
के तियागी कहेतै?

मरलहाकँ
मारि दागी बनल
साधु बनि कऽ
जगकँ ठकलक
इंसाफी के कहेतै?

अन्याय भेल
समाज टुटि गेल
केना जुड़त
बनत सर्वहित
की हेतै अनरीत

जे जेना भेल
आबो तँ रहु मिलि
सभक हित
जन कल्याण हेतै
नव समाज एतै

पानि रंग
जेना समाज हेतै
भेदभव नै
नव विचार संगे

सभ गर्वसँ जीतै

एक मनुख
एके रंग लहू छै
एक प्रकृति
एके रंग सृष्टि छै
भेद भाव कीए छै?

अवगुणकँ
तियाग करू जानि
जेना करैए
हंस पानि तियाग
ई छी ज्ञानीक वाणि

रूप कुरूप
सँ नै छै कोनो हानि
गुण उत्तम
सर्वहित समान
से पाबै ऊँच स्थान

बच्चा बेदरू
भगवानक रूप
प्रेम भूखल
भेद भाव नै जाने
सभक प्रेमी अछि

घृणित काज
अधर्मी ने करैए
उत्तम काज
दयावान करैए
सर्वहितक दान

आगि जराए
जंगलकेँ बनबै
छै, सुनसान
चिंता पहुँचाबै-ए
अर्थीपर श्मशान

साँझक समे
उदासी रहै मन
देह गरम
कठोर परिश्रम
डुमल छेलौं गम

प्रशंसनीय
मैथिली रंगमंच
दिशाहीन भऽ
रणक्षेत्र छोड़ि कऽ
उगडुम भऽ गेल

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

यात्रा क्रममे
हाट बजार देख
मनमे भेल
चुप्पे किछु कीनली
देख महगी गुप्पे

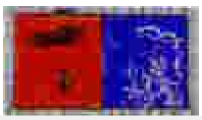
बेरोजगार
महगी मारि खाए
दुनू साँझक
रोटीक जोगारमे
बेमार पड़ि गेल

पेटक प्रश्न
जटिल बनल-ए
मजदूरकेँ
रोजगारक चिंता
खोजे स्वरोजगार

बोनिहारकेँ
नै छै खेत पथार
तैँ छै लचार
पेट केना भरतै
नहि छै रोजगार

गरीबसँ छै
सरकार बेमुख
दुखे दुख छै
गामक महाजन
ऋृण खुआ मारै छै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऋृण खाए कऽ
गरीब जनमै छै
ऋृणे मरै छै
धिया-पुताक लेल
ऋृणे छोड़ि जाइ छै

उधार पैंच
गाम समाजमे छै
शहरमे तँ
नगदीए चलै छै
तँ गाम उत्तम छै

सुखक खान
गामक जिनगी छै
शहरक तँ
बनल छै विधान
बाटे पर मरै छै

अन्न पानि-ले
गामक मजदूर
नहि मरै छै
स्वरोजगार लेल
दिन-राति झखै छै

रोजी-रोटीक
समस्या बनल छै

लचार बनि
अपन लेहू बेचि
धिया-पुता पालै छै

अनकर जे
हक मारि खेलक
सुखक भोग
दुनियाँ भोगलक
से तँ नर्क भोगत।

धरम छोड़ि
अधर्म जे केलक
सभकेँ ठकि
दुनियाँ ठकलक
मुँह केना देखौत

भोगी रोगक
इलाज नै होइ छै
मन बुझैले
उपचार करै छै
मनरोग रहै छै

रोगीक दुख
दुखिया जनै छै
जे रोग सहि
जगमे जीबइ छै
देख आन हँसै छै

आम लताम
मिथिलामे प्रधान
अनार, जौम
रक्त वर्द्धक अछि
अनरनेबा प्राण

मन रोगक
इलाज केना हेतै
अधक्की बनि
सभकेँ लूटि-लूटि
संतोषी कहबै छै

सभ रोगसँ
मनरोग भारी छै
एकर नहि
छै कोनो उपचार
चिंताक छै शिकार

अँवला नेबो
अमृत समान छी
नीम दबाइ
आम अनरनेबा
पेटक राखै मान

पेटक रोग
गुलैर भगबै छै
ऑंव पित्तकेँ

ठीकसँ पचबै छै
शक्तिकेँ बढ़बै छै

शोगसँ रोग
शोगए रोगी बनि
भोग उठल
भाग्य हारि सुतल
दुनियाँसँ रूसल

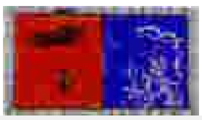
फूल नै होय
गुल्लैर मासे फड़ै
पकि झड़ै छै
दबाइ अमृत छै
खाए पेट भरै छै

जामुन छाल
ओ पात, फड़, बीआ
मधुमेहक
अमृत दबाइ छी
पौध गुणकारी छी

धारक धारा
पकैड़ ज्ञानीजन
जग कल्याण
नव युग निर्माण
करैत जीबै छैथ

ऊपरकासँ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पैघ धन नै अछि
प्रेमसँ बढ़ि
कोनो सुख नै अछि
सभकेँ जरूरी छै

अनमोल छै
मनुखक जिनगी
जँ उपकारी
बनि सेवा करए
मीठ फल पाबत

कारण की छी
नारी हत्या होइए
बदनामी तँ
पुरुख सहैत-ए
की यएह सत्य छी?

अपन माए
बहिन, पत्नी देवी
अनकर छी
कुलक्षणी, डाकनी
नीति की कहैत छै

प्रेमक बाट
पकड़ैए विद्वान
मधुर वाणि

बोलि रस बँटैए
जैसँ जग कल्याण

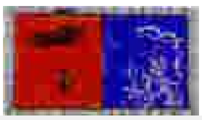
फूल बनि कऽ
गमकैँ चहुओर
दिलक दर्द
हरि मन जीतैए
सर्वहित करैए

जन कल्याण
सेवा अछि महान
उत्तम दान
विद्यादान होइए
श्रेष्ठ फल पबैए

एक नारीकेँ
दू नजैरसँ देखै
की देखैबला
दू रंगक होइए
अन्ध बनि देखैए

सभ नरकेँ
नै छै सम विचार
तँइ बहै छै
जगमे खूनक धार
बढ़ै छै अत्याचार

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

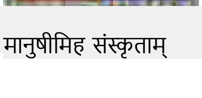
गामक दशा
जा नहि सुधरतै
गरीब केना
खुशहाल बनतै
की देख सुधरतै?

गरीबक छै
समस्या पैघ भारी
लचार बनि
हाथ जोड़ि बैसल
दुख सहि जीबै छै

मजदूरकेँ
जा रोजगार नहि
मिलतै ता नै
देश विकास हेतै
संकट बढ़ि जेतै

बाढ़ि पानिक
संकटे टा नहि छै
रौदी समस्या
गंभीर बनल छै
मुक्ति केना भेटतै?

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कृषि योजना
बेकाम पड़ल छै
गरीबी केना
देशसँ दूर हेतै
भूखे लोक मरतै

पैघ समस्या
देशक जनसंख्या
रोजगारक
समस्या छै गंभीर
क्रान्तिक रूप लेतै

सरकार छै
बेवस्थामे हुसल
जनता अछि
संकटमे फँसल
दुखकेँ के हरतै?

सुधरलकेँ
सभ बिगाड़ै छइ
बिगड़लकेँ
सुधारै नै छै कियो
सभक सिर विषेतै

कालाबजारी
जाधैर नै रूकतै
महगी बढ़ि

अकास चढ़ि जेतै
के रोकतै एकरा?

देशक माल
विदेशमे भेजैए
महग माल
बेपारी दाबि रखि
जनताकेँ लूटैए

भ्रष्टाचारक
जन्मदाता ऊँचका
पालनकर्त्ता
सेहो तँ जनता
मुक्ति केना भेटतै

वृक्षारोपन
वन संरक्षणकेँ
बढ़ाबा दियौ
प्रदूषण घटत
जीव जन्तु बँचत

प्रदूषण छै
जगतक समस्या
केना घटतै
जा मनुखक कर्म
सद्कर्म नै हेतै

मनुख द्वारा

सृजल कुकर्म जा
नै बदलतै
ताधैर प्रदूषण
विष बनि सतेतै

प्रदूषणक
कारण जनसंख्या
जा नियंत्रण
नहि हेतै ताधैर
दुख सहे पड़तै

प्रदूषणक
निवारण नै हेतै
ता जलवायु
परिवर्त्तन हेतै
कुप्रभाव बढ़तै

धरती, वायु
जल प्रदूषित छै
वायुमण्डल
विषक समान छै
केना मुक्ति मिलतै?

हल्लुक माटि
बिलाइ खुनि कूदै
मोछ टेर कऽ

छालही घुमि खाए
साधु सन्त कहए

मूसक माटि
पर मुसरी नाचै
बिलाइ देख
बिल घुसि दुबैक
टाल ठोकि सुतए

दलालक तँ
घोड़ो बिकाइ छइ
कुकुर कहीं
आगि झड़कै छै
कौआ सन्त होइ छै

खेल खेलाड़ी
नचनियाँ अनाड़ी
घोड़ा सवारी
नदीकातक बाड़ी
नै अछि अख्तियारी

बैसले लोक
अमृत खोजैए
तँए जिनगी
निर्धिन घिनाइए
नर्के स्वर्ग बुझैए

सम्प्रदायकँ

ISSN 2229-547X VIDEHA

धर्म बुझि मनुख
कर्म बदैल
समाजकेँ तोड़ैए
स्वार्थ सिद्ध करैए

पाखण्डी रस्ता
पकैड़ आडम्बरी
भेदिया भेद
विषवाण छोड़ैए
क्षणे प्राण लइए

देश, समाज
सम्प्रदाय तोड़ैए
जातिक भेद
पाखण्डी बनबैए
जानि हानि करैए

खूनी हत्यारा
लोक किए बनैए
मानव प्रेम
भूलि खून पीबैए
धर्मी कहि जीबैए

हल्लुक काज
सभ खोजि करैए
हलुआ खाए
भैरवियो गाबैए

जग देख हँसैए

राजभाषाक
दर्जा देबाक मांग
मिथिलावासी
अदौसँ करैत-ए
सुनै नै सरकार

अपन भाषा
मैथिली जनभाषा
अपन राज्य
मिथिला छी महान
अछि स्वर्ग समान

मिथिलाक छी
मैथिली जनभाषा
राजभाषाक
दर्जा कहिया हेतै
पढ़तै धियापुता

अनरनेबा
उत्तम फड़ भारी
भूख जगबै
गैस, पित्त, कब्जकेँ
समाप्त करै छइ

बेरोजगारी
दिन दिन बढ़त

कम उद्योग
काज करत यंत्र
बनु स्वरोजगारी

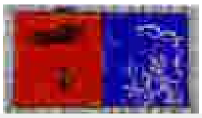
कुकर्मी भारी
सुकर्मी हल्लुक-ए
जानमालक
खतरा बढ़ल-ए
कानून की करैए

चोरी उठल
डकैती बढ़ल-ए
अपहरण
हत्याक उद्योग तँ
विकसित भेल-ए

जखने भेल
कुपुत्र खंदानमे
मान सम्मान
पानिमे चलि गेल
स्वर्ग नर्क भऽ गेल

ओसक कण
घासपर पड़ल
मोती बनि कऽ
धरती सजि गेल
भोर आनन्द भेल

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

अकास रंग
सभ रंगसँ नीक
मनक रंग
सतरंग नहाए
बाँकी निधि समाए

ज्ञानक सुख
अमृत सागर छी
भौतिक सुख
क्षणिक नाश्वर छी
तैले कीए मरै छी

खिलल फूल
हँसि मालिकेँ कहै
नै बनु स्वार्थी
जग छै मतलबी
के करत इंसाफ?

मान सम्मान
लेल सभ मरैए
के अछि दोषी
विचार के करत
जे अछि खुद दोषी

ISSN 2229-547X VIDEHA

मजदूरक
देह नै दुखाइ छै
बैसलहाकेँ
देह दुखि रोगी छै
के करत दवाइ

जे सभ दिन
खेलकै चाटि चाटि
मलाइयेटा
सुखल केना खेतै
कण्ठ फँसि मरतै

माल मारि कऽ
जे सभ खेलक-ए
साधु बनि कऽ
धोखा दैत रहल
से तँ नर्क भोगत

बैसले खेतै
रोपतै बगूरो ने
आम केना कऽ
सभ दिन खाएत
धेने रहत खाट

सबलताकेँ
पूजा सभ करै छै
निर्बल जानि

बकरी बलि चढ़ै
देवीक भोग लगै

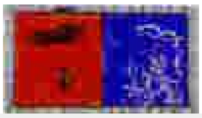
शिकारी करै
हरिणक शिकार
शेर करै छै
शिकारीक शिकार
की ई छी अत्याचार

डाकूसँ साधु
भोगीसँ जोगी बनि
बौआइत छै
कर्म छोड़ि जगकेँ
ठक बनि ठकै छै

उसैर गेल
मिथिलाक रिवाज
डोली, कहार
डम्फा, बौसली, नाच
संगे रसनचौकी

पतन भेल
वियाहक चलैन
विदा होइए
मोटर साइकिल
केना देखब डोली?

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

बिनु लगने
बियाहक चलैन
राति बिआह
भोरे तलाक होइ
महफ्फा कीए औत?

अपन चालि
छोड़ि बन्दर नाचै
वर-कनियाँ
मीठक जड़ि खेतै
बरियाती की हेतै?

नीक होइत
कनियाँ छोड़ि लोक
दहेज संगे
बियाह करैत तँ
जनसंख्या कमतै

पढ़ि लिखि कऽ
लोक बनराएल
पथ कुपथ
पकैड़ चलै छइ
श्रम चोरी करैए

दीनक दुख
पात-फूल सन छै
अमीरक छै

पहाड़ सन दुख
कर्मे फल मिलै छै

अमानवीय
सोच नक्सलवाद
खूनी हत्यारा
आतंकवादी बनि
शोक संताष दिए

वंशवाद आ
परिवारवादसँ
समाजवाद
खतरामे पड़ल
लोकतंत्र मरल

अपन दही
सौजबी मीठ कहै
अनकर तँ
छै चुन्ने सन खट्टा
अछियो घोरे मट्ठा

उत्तम खेती
नौकरी छी छोटहा
स्वर्गक दुख
गामक जिनगी छी
प्रमाणो अछि पक्का

जखने पुत्र
परदेसिया भेल
देव पित्तर
सेहो उजैर गेल
संस्कार हीन भेल

हल्लुक माटि
मुसरी खोदहै छै
खेतक माटि
जे खौदि उपजाबै
वएह दुख पाबै

टटका पानि
भोरेमे करू स्नान
दही चूराक
चलपान हुए तँ
शरीरक कल्याण

सुडौल देह
व्यायाम बनबै छै
स्वस्थ दिमाग
फूर्ति तनदुर्स्तीक
संगे आयु बढ़ै छै

निरोग तन
मन अति प्रसन्न
दिल दिमाग
स्वस्थ सभ अंग
काजमे लगै मन

सभक लेल
खेल-कूद जरूरी
साधनहिन
केना खेलत खेल
बेवस्था छै फेल

खेल-कूदमे
छै बड़-बड़ भेद
महग खेल
अमीर सभ खेलै
मंगनी खेलै दीन

खेल खेलमे
धिया-पुताक मेल
भेद भाव नै
कखनौं झगड़ा तँ
लगले करै मेल

कसरतसँ
शरीर बलगर
मन प्रसन्न
खून संचार कमि
राखैत-ए निरोग

व्यायाम राखै
शरीरकैं निरोग

बल बढ़ए
भूख, रूचि जगबै
फूर्ति राखै शरीर

कब्बडी खेल
गरीबक खेल छी
नै कोनो खर्चा
सभ मौसम खेलु
अछि मनोरंजक

केरा, लताम
बारहो मास फड़ै
गुण भरल
गरीबक छी फल
बड़ ललीचगर

जातिक भेद
अंधविश्वास अछि
आडम्बरसँ
समाज ओझराए
दिशाहिन बनैए

पूजा-पाठ आ
हरि नामक जाप
दिखाबा नहि
तनमन अर्पण
ईश्वारमे रमण

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

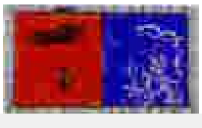
आँखि बचाउ
रौद, गर्दा धुआँसँ
साफ राखि कऽ
देखू दुनियाँदारी
रत्न छी अनमोल

दाँतकेँ करू
दतमैनसँ साफ
नीम, साहुर
बगूर छै उत्तम
दाँत राखै निरोग

खैनी बीड़ीसँ
करियो परहेज
मुँह, दाँतक
नहि हएत रोग
रहत मन प्रसन्न

गाजर मुड़ै
सागसँ करू मेल
ज्योति बढ़त
कब्ज दूर करत
रोग नहि छूबत

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

साफ सफाइ
पर दियौ धियान
मुक्ति मिलत
रोगक जीवाणुसँ
प्रदूषण घटत

टमाटरमे
गुण भरल अछि
नित्य खाइसँ
रूचिकेँ जगबैए
रोगकेँ भगबैए

साँझ विहान
गामक दलानमे
बैसार करू
सभक बात सुनि
करू हितक काज

अखन नैए
गामक दलानमे
विचार लेल
बुजुर्गक बेवस्था
केना हेतै विकास

माफ करबै
कहल सुनलकेँ
नैए वैरागी
दुनियाँ छै तियागी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

के करत विश्वास?

मोफत माल
सभ कियो खोजैए
परिश्रमसँ
किए लोक डरैए
जे भोगी बनल-ए

भोगी कहैए
जेगी छी हम सभ
कर्मक चूक
भेने पाप करै छी
लोभ फँसि मरै छी

वीर बिनु नै
जगत चलै छइ
कर्मक मान
सदिखन मिलै छै
कर्मसँ मिलै स्थान

बानर चलि
मदारी पकड़ै
चिड़ैक चालि
शिकारी पकड़ैए
कर्म भटैक मरै

सागो खाए कऽ
बनी विद्वान तँ

ऊँच आसन
सदकर्म बितत
जिनगी तँ आनन्द

सत्य काज तँ
नै अछि कोनो चिन्ता
नहि बनाउ
यात्रा पत्तरा देख
अंजाम माफे-माफ

नेक इंसान
सदिखन पूजाए
धरती मानै
अपन पुत्र सन
जगमे होय नाम

जिनगी-शत्रु
मोह, लोभ, क्रोध छी
संगमे रहि
जिनगी बिगाड़ैए
क्रोध जीते जारैए

मनक मोह
मायामे फँसबैए
श्रमदान तँ
कर्मकेँ बढ़बैए
विद्या बढ़बै यश

ईमान धर्म
इंसानक बाट छी
उत्तम कर्म
जिनगीक साधन
सेवा कर्म श्रृंगार

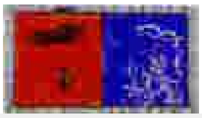
दूधमे पानि
कहबैए तँ दूधे
काजसँ जाति
धोखा खाए बदली
मुँह रंगि चलैए

दुर्जन मरै
कफनो नहि मिलै
साधु, सजान
दूध मेबा पबैए
कौआ हंस नै होइ

चोरक शत्रु
महाचोर होइ छै
सही इंसान
सज्जनकँ शत्रु नै
पैघ शत्रु छी धन

अहिंसा मार्ग
विश्व पकैड़ चलै
कल्याण हेतु

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पाछूसँ आगू बढ़ि
शान्ति खोजि जीबैए

गड़बड़ी छै
देशक बेवस्थामे
हिनभावसँ
दोसरकेँ देखै छै
असंतोषे जीबै छै

ऊँच नीचक
दूरी बढ़ि रहल
जा धरि नहि
समानता हएत
नै हएत विकास

अपन सुख
बैसले खोजैए
दोसरकेँ तँ
खाधिमे गिरबैए
उन्टे नोर बहबै

सभ एके छी
मनुखक बेवस्था
किए ने एक
केकरो छै घी, मेवा
कियो मरै रोटी-ले

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

किओ मरैए
कोठा, नौलखा लेल
किओ लूटैए
सोना हीराक खान
खोपरी केकरा-ले?

तियागी नहि
नाओं कमबै लेल
करैए खेल
स्वार्थ सिद्धि लेल तँ
फल खोजेए मधुर

कर्मक चूक
रणसँ पराएल
मृत्यु समान
जिनगी अकारथ
भेटै नै दूजा तन

मान सम्मान
सभक छै समान
बेवस्था किए
विषम बनि-बनि
ऊँच नीच करैए

केना कहब
दुख सुखक बात
देश चलैए

उनटे बिनु बाट
दागीकेँ अछि धाक

सभ साधु तँ
चोर केतए गेल
चालि बदैल
परमोशन भेल
चोरसँ डाकू भेल

खान पानमे
संतुलित अहार
नित्य व्ययाम
भोरक स्नान सेहो
रोगक निदान छी

खेल कूद आ
व्यायाम शरीरक
रक्त संचार
करैए संतुलित
दूध अमृत पान

फल मेवा तँ
शक्तिवर्द्धक अछि
साग पातसँ
नेत्रक ज्योति बढ़ैए
दूध पूर्ण अहार

साग पतार
शरीरक रक्षक
आँखिक ज्योति
आँतक बेमारीकेँ
रखबारि करैए

गरीबक छी
अड़िकंचन साग
उत्तम स्वाद
खाइले ललचैए
पैचियो लगबैए

गेन्हारी साग
बड़ गुण्कारी-ए
उत्तम साग
रोगी भोगी खाइए
सभ दिन भेटैए

पटुआ पोरो
सागकेँ के पुछैए
घौका साग तँ
महग बिकाइए
सभ मिलि खाइए

सभ गुण छै
बथुआ सागमे
सेरसो साग
श्रेष्ठ सुआदी बनि
सभक दिल बसै

करमी साग
थाल पानि उपजै
चौड़ चाँचर
लतैड़ चतैड़ कऽ
ओर अन्त नै लगै

जाड़क मास
सुआ मेथीक साग
अल्लू चटनी
नयका चाउरक
भात-ले तरसै छी

गर्मी समय
सरहंची साग आ
नोनियाँ संगे
पुदीनाक चटनी
हितकारी होइए

अमरलत्ती
नै पत्ता फूल फड़
पानक लत्ती
पत्ता चतैर
दुनू गुणकारी छै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

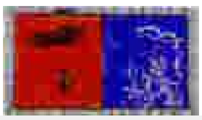
साँझ देखियौ
दीयाबाती तेलकँ
तीनू मिलि कऽ
जग इजोत करि
जन कल्याण करै

बिनु प्रेमक
जग सुन्ना लगै छै
तेल बिनु नै
दियाबाती जरै छै
प्रेमी देख तरसै

दोस्तीमे कुश्ती
दुश्मनसँ जँ मेल
जे करै छइ
जानि बुझि झमेल
जिनगीमे नै चैन

सभ खुश तँ
जगत खुश अछि
यएह तँ छी
पैघ शुभकामना
पूर्ण मनोकामना

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

थालमे गैंची
लत्ती अमरलत्ती
बड़ चतुर
नागफेनीक काँट
कठजीव होइए

बाड़ी झाड़ीमे
सेवसन लताम
अमृत फल
गरीबो खाइए
मंगनी फलदान

ऑंखिक नोर
बरखा बून जकाँ
टपैक गिरै
दिलमे टीस मारै
के बाँटतई दुख?

महगी मारि
सभ सहि मरैए
लूटेरा बनि
अधिकारी बेपारी
गरीबकेँ मारैए

बेदागी पर
दागी भाड़ी पड़ल
देशक सत्ता
गिद्ध कौआ हाथमे

दीनहीन मरैए

घी मे तरलु
करैलाकैँ तइयो
हएत तीते
जड़ि खाऊ की छीप
ईख लगत मीठे

कुकुर कहीं
आगि पकै छै, ठक
कहीं उपास
नंगटा नँगे नाचे
के करत विचार

अपन चालि
छोड़ि कुकुर चालि
किए चलै छी
ऑंखिमे पट्टी बान्हि
जग किए देखै छी

जगक सुख
कर्महीन लेल नै
तियागी लेल
सुख क्षीर सागर
सत्य कर्म प्रधान

बिनु श्रमक
श्रम नहि होइए
बिनु श्रम नै

धरती उपजैए
मोफतमे नै सोना

असल सुख
श्रमिककेँ मिलैए
परिश्रमसँ
जिनगी चलबैए
दुखे सुख बुझैए

नसीबमे नै
दुनू साँझक अन्न
कपड़ा नैए
झाँपितौं पूर्ण अंग
सुतैले नहि घर

बाट ससैर
बटोही चलैए
पानि ससैर
नव गति पाबैए
छी जिनगीक गति

चान छिटैक
पसारै इजोरिया
प्रेम उमैर
लुकछिप खेलैए
बदरी संगे चान

चानन वृक्ष

ISSN 2229-547X VIDEHA

कूहकै कोयलिया
ओसक कण
देख तृष्णा नै मिटै
नेनसँ बहै नोर

सभ नम्हर
छोट कहै नै कोइ
जे करै छोट
अहित कम मुदा
सभक हित होइ

काज लेल नै
नाओं लेल नम्हर
जीबै मरैए
पत्थर पट्ट पर
नाओं खोदबै लेल

सत्य छोड़ि कऽ
इंसान नै चलैए
देह छोड़ि नै
लहू प्राण रहैए
जेना नभमे सूर्ज

बरखा बून
सुखल धरतीकँ
नभसँ आबि

बुझबैए पियास
सजे लगैए खेत

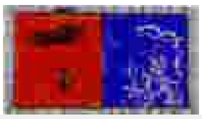
बाँस आ वंश
समरूप होइए
जीवितो संग
मरितो संग रहि
संगे संग जरैए

वंशीक स्वर
सभकेँ मन मोहै
अमृत सुर
रसपान कराबै

संगीत सजि
सुरताल बढ़ाबै
रागतालसँ
जगत सुख पाबै
रोगीक रोग भागै

राग भरि कऽ
मल्हाड़ सुर गाबै
ताल ठोकि कऽ
बजबे ढोलकिया
प्रेमी छै सुनबैया

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मृदंग बाजै
धा धीप धा धीप धा
तबला बाजै
ती ती ना धी ना धी-ना
गुमकै गुमगुमियाँ

संगीत स्वर
साजे हरमुनियाँ
आठ स्वरसँ
जगबैए दुनियाँ
नाचैए नचनियाँ

भोगी जोगीमे
बहुत भेद होइए
एक बिलासी
दोसर कर्मवादी
बिचला सुखदायी

मरूआ रोटी
नून तेल मिर्चाय
नोनीक साग
पियौज खटाइक
संगे खाइए भोगी

चाउर चूरा
बासमती धानक
बड़ सुन्नर
जे ई उपजाबैए
सेहे स्वाद पाबैए

नाक बिनु नै
शोभै छइ मुखड़ा
दाँत बिनु नै
मुँह शोभैत अछि
आँखि बिनु नै जग

राति बिनु नै
तरेगन शोभैए
सुरुज बिनु
दिन नै शोभै छइ
पानि बिनु नै जीव

पानि बिनु जे
माछ तड़ैप मरै
शोनीत बिनु
जीव जन्तु मरैए
दूध बिनु चिलका

कर्महीनक
काज उल्टे होइए
सम्प्रादायकेँ
धरम बुझै छइ
दीप ज्योतिकेँ अंध

घास खाए कऽ
गाए दूध दइए

उपकारक
बाटपर बटोही
अजीवन चलैए

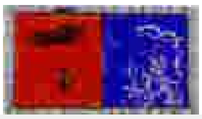
विकास देख
मनुख मनुखसँ
जरि मरैए
सभहकहित नै
स्वार्थ लेल जीबैए

साँझ पहर
फतिंगा उड़ै छइ
दीप जरिते
सभ उड़ि अबैए
जरि-जरि मरैए

नरक भोग
भोगैत छै नरकी
जोगीसँ भोगी
सुख छीन भागै छै
स्वर्ग जाइ खातिर

हवा बहै छै
पूरबा आ पछिया
मेघ पहुँच
पानि बरसाबै छै
धरती उपजै छै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रसिद्धी लेल
सभ मरैत अछि
इज्जत लेल
कियो-कियो मरैए
स्वार्थ लेल जीबैए

राम नामक
नदीमे कोइ कोइ
नहाइ छइ
अहित केकरो ने
सभक हीत लेल

सुख सीमाक
अन्त होइ छै मुदा
दुखक अन्त
कहियो ने होइ छै
दुखे सुख होइ छै

बाह रे देह
तोहर कोन कोन
गति होइए
मन घेरल अछि
तन घिनाएल

जेकर तन
दोसरसँ छुबाइ
से छुतहर

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

किए ने कहाइए
से घरहर केना?

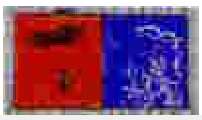
खाइ लेल नै
जीबइ लेल खाउ
अपन पेट
कुकुरो पोषैए
कर्महीन किए ने

मनक शान्ति
सभसँ उत्तम छै
सुखक खान
संतोखसँ भेटै छै
धर्म हित लेल छै

भाषाक रक्षा
सभक कर्म धर्म
बिनु भाषा नै
कोनो काज होइ छै
सभकेँ जरूरी छै

छूआ छूतसँ
भेद भव बढ़ै छै
समाज टुटि
कमजोर बनै छै
हानि छोड़ि लाभ नै

जातिवादसँ



प्रेम घटैत अछि
विकास कम
विवाद बढ़ि गेल
लाभ नै हानि भेल

पानि पेट्रोल
बँचाउ आगू लेल
केना जीअब
धनसँ बेसी मान
जीब जन्तु लेल छै

महुआ गाछ
फुलाइते गमकै
रस टपकै
मधुमाछी लुबैध
अमृत मधु दइ

अनरनेबा
जे सभ दिन खाए
अमृत फल
रोगक निवारण
काया करै कंचन

जारैन जरि
उपकर करैए
सभक लेल
उपयोगी होइए

भेद नहि बुझैए

भेद कुभेद
प्रकृति नै जानैए
जीव जीवकेँ
मतभेद करैए
देख ज्ञानी हँसैए

गरम रौद
तपि घरा जरैए
प्यास कहिया
मेटत, से मरै छी
नै घास उघारे छी

मेघ देख कऽ
किसान हुलसैए
बरखा बून
गिरि धरती जागि
अंकूर लऽ बढ़ैए

हर्षित मने
किसान खेत जोतै
बीआ उपारि
धनरोपनी करि
अन्नसँ कोठी भरै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

देशक मान
किसान बढ़बैए
सभक हित
श्रमदान करि कऽ
अन्नदान करैए

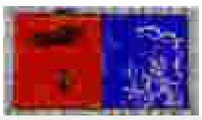
अन्न बिनु नै
जिनगी चलतै तँ
खेती किए ने
सभ मिलि करतै
हेतै विकास काज

जन काटैए
झाड़ी वन पर्वत
बनबे मार्ग
सुगम लोकहित
तइयो उपेक्षित

गरीबजन
महाजन दबंग
केना जीअब
समाज संगे संग
देखैए दू नजैर

अपन घर
टुटलो मरैइया

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

सुखक खान
अनकर महल
नै दिए कोनो काम

बाबाक सुग्गा
मीठ फल ने खाए
लाल मिर्चाइ
लेल रूसि रहए
केना भक्ति हएत

जे जनमैए
एक दिन मरैए
बाट भटैक
रणक्षेत्र छोड़ैए
केना जीतत जंग

हित अहित
सभसँ होइ छइ
सभक हित
साहित्यमे होइए
से जगत जानैए

जाल फँसि
जेना माछ मरैए
शब्दजालमे
तहिना साहित्य
मरि काल बनैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

तनक संग
करू मनकेँ साफ
हित अहित
देख कऽ चलु बाट
नहि लागत दाग

उथर धार
रहि रहि उधिया
गहींर धार
चुप्पे चलैए चालि
कहियो ने सुखाए

हँसैत फूल
देख भैंरा कहए
नित्य रहब
दुख सुखक संग
मन करू प्रसन्न

बात सुनि कऽ
फूल भेल प्रसन्न
झूला झुलब
पवन संगे संग
रहब उपवन

रहब वन
पीअब मकरन्द
मधुर रस

डुमल अंग अंग
सुख दुखक संग

स्वर्ग मिथिला
तेहने माटि पानि
गामो तेहने
खेत खरिहाँनमे
भरल धान पान

अनपढ़कैँ
दी अक्षरक बोध
पोथी पढ़ि कऽ
ज्ञानी बनि ज्ञानकैँ
घर घर बाँटत

श्रमिककैँ दी
काज करैक ज्ञान
भुखलकैँ दी
दू रोटी भोर-साँझ
बनु नेक इसान

आँखि मिला कऽ
सभ हाथ मिलबे
दिल मिलबे
ने कोइ, जँ मिलबे
दिल, जग प्रेम बहै

जाति धर्ममे
छोट छिन झगड़ा
अखन धरि
लोक सम्प्रदायमे
बँटल वौआइए

जन कल्याण
समाजक निर्माण
शिक्षाक दान
देशक उत्थानमे
सभक जरूरी छै

धन लगाबी
समाज कल्याणमे
हेतै विकास
आगूओ हितकारक
ज्ञानी करत काज

दहेज रूपी
दानव केना एलै
जइ चक्कीमे
सभ पिसा रहल
सभ लूटा रहल

सभ दयालु
जग सुखी रहत
केकरोसँ नै

घृणा सभसँ प्रेम
जगकैँ छै कल्याण

रोगसँ देह
चिंतासँ चतुराइ
मनरोगसँ
सभ किछु घटैए
कहैए ज्ञानी कवि

बच्चा बेदरू
अनबुझ होइए
काम, क्रोध नै
निश्छल मन होइ
सभ प्रेम करए

रूप नै देखू
बेवहार चरित्र
नीकसँ देखू
जँ चरित्रमे दाग
तँ कलंकक बात

ज्ञानी ज्ञानसँ
योद्धा मारे तीरसँ
मुर्ख मारे
ठेंगाफोड़े कपार
पाप पुण्य नै होइ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जादू टोनामे
दृष्टि दोष होइए
मनक शंका
भ्रमित लोक सभ
नेत्रहीन सन-ए

घृणा नै करू
रोगीसँ, सेवा करू
तन मनसँ
प्राण बँचेतै धन
ओ धन उत्तम छै

मन चंगा तँ
कठौतीमे गंगा छै
दूषित मन
नर्कोसँ गन्दा होइ
कर्मे स्वर्ग सन छै

भूदानसँ नै
जीवन दान मिले
पैघ दान तँ
अन्न रक्त नेत्र आ
विद्यादान होइ छै

भावे भजन
अभावमे भोजन
दुखमे हरि

दर्शन होइत छै
संतोखे सुख होइ

अमृत वाणी
सुखक खान अछि
प्रेम अमर
पैघ धन विद्या छी
शेष नाश्वर अछि

फूल बिनु नै
फल बीज होइए
बिनु कर्म नै
सफलता मिलैए
श्रेमे धन बढ़ए

बरखा बून
तृण-तृण जगबै
धरती सजि
अन्न फल उपजे
जीव रक्षा करैए

बेसी खुशी नै
नीक होइत अछि
बेसी धनसँ
दुख दर्द बढ़ैए
बेसी लोभ मरैए

मध्यम मार्ग
सभ मार्गसँ नीक
दुख सुखक
संगम चिंतनसँ
सुख प्राप्त होइए

भक्तिमे शक्ति
जिनगीक गतिए
कर्मे धर्म छी
श्रमक प्रधानता
सुख शान्ति दइए

दुखक जड़ि
लोभ मोह माया छी
सुखक खान
निर्मल मनमेए
क्रोध मृत्यु आनैए

खिलल फूल
देख भ्रमरा नाचे
प्रेमिका देख
मोर मयुर नाचैए
प्रेमीकेँ सताबैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मान सम्मान
रोटी वस्त्र मकान
सभकेँ चाही
गरीब अमीरमे
भेद भाव नै चाही

सुखक इच्छा
सभ करैत अछि
दुख इच्छा
नहि करैए कोइ
दुखेसँ सुख होइ

रौद छाहैर
दुनू संगे रहैए
तहिना संगे
दुख-सुख रहैए
जेना तनमे प्राण

पैसासँ वस्तु
खरीदल जाइए
नीन चैन नै
प्रेमसँ शान्ति मिले
जग सुन्दर होइ

धन बलसँ
घमण्ड बढ़ै छइ
श्रृंगारसँ तँ
सुन्दरता बढ़ैए
कर्मसँ यश धर्म

मृग तृष्णामे
वन वन भटकै
एलैए देखू
पानि जानि कऽ
तड़ैप प्राण दइ

माछ पानिसँ
नारी पति गहना
शेर वनसँ
बच्चा माए दूधसँ
बैर नहि करैए

पिता पुत्रसँ
विद्वान किताबसँ
लोभी धनसँ
सत्यवादी सत्यसँ
प्रेम करैत अछि

धान पानकेँ
बड़ मान होइए
धान पेटक
मान रखैत अछि
मुँहक लाली पान

मन हर्षित
गाबे मधुर गीत

भरल पेट
चैनसँ खींचे नीन
ने खुशी ने गम-ए

चिड़ै ने खाए
बेल नरियलकेँ
ने खाए राही
मुदा दुनू रहैए
ऊपरसँ कठोर

बीच कोमल
ऊपरसँ कठोर
दुनू दबाइ
बेल नारियलकेँ
पेटसँ बड़ मेल

माघक बाछी
चैत लगौल गाछी
भादोक कादो
चौरचनक दही
बड़ नामी होइए

लड्डू पान आ
धूप दीप फलसँ
देव पूजैए
प्रेम भक्ति बिनु नै
देव शक्ति मिलैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रेम मार्गसँ
दोसर नै पैघ-ए
प्रेम बिनु नै
देवो खुश होइए
प्रेम दिल जोड़ैए

टुटल दिल
जोड़ल ने जाइए
प्रेमक बान्ह
बान्हल जाइत-ए
तोड़नौं ने टुटैए

सौनक मास
बिजुरी चमकैए
मेघ बरसै
धान रोपि गाबैए
सोहर समदौन

सावन मास
गरजैत बरसै
मन तरसै
भिजै छै तन मन
मन्द पवन बहै

दूध आगिसँ
पुष माघमे मेल
गर्मीमे दही

ISSN 2229-547X VIDEHA

भोजन करै सही
खट्टासँ दूर रही

फागुन मास
रंग अबीर खेलै
फगुआ गाबै
ढोल मजीरा झालि
बजा खुशी मनाबै

जरूरी अछि
सौनक साग-पात
भादोक दही
आसिन कातिकक
शीतसँ बँचि रही

अमृत फल
अँबला कहबैए
आम फलमे
मधुरस होइए
फलराज शोभैए

माटि पानिसँ
अन्न उपजै छइ
खाए जीबैए
सभक छै कल्याण
बिनु अन्न मरैए

दुभिक घास

बड़ गुणकारी-ए
जीवन हित
कल्याण करैत-ए
धरती बँचबैए

घासमे दुभि
सभसँ उत्तम-ए
अमृत पीब
अमर कहबैए
सगरो भेटैत-ए

अमरलत्ती
अमर होइत-ए
अनके बले
जीबैत मरैत-ए
परजीबी होइए

गुरूचलत्ती
दबाइक गुरु छी
लाभकारी आ
रोगीक रोग हरि
सबल बनबैए

जादू मन्तर
टोना-टापर तँ छी
अन्ध विश्वास
तांत्रिकक जंतर

ISSN 2229-547X VIDEHA

नहि छी छू मंतर

ज्ञानीक ज्ञान
हितकर होइए
अभिमानीक
ज्ञान कष्टदायक
गुरु ज्ञान उत्तम

गुरुक दान
वरदान होइए
अन्न दानसँ
जिनगी बँचैत-ए
जल तँ छी जीवन

बड़ कठिन
मनुख तन मिलै
लोभ मोहमे
फँसि घुमैत रहि
आगिमे जरि मरै

धर्मसँ पैघ
श्रम, कर्म होइए
अनुभवसँ
अकुर काज होइ
मुद्रासँ राजकाज

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कला नाटक
पुरना संस्कृतिकेँ
बँचा राखैए
कलाकार कलासँ
दिल खुश करैए

गामक नाच
मृत भेल जाइए
वीर गाथाकेँ
लोक बिसैर गेल
खोजैबला नै कियो

गाम घर तँ
देशक प्राण अछि
शुद्ध पवन
हरियर खेतमे
स्वर्ग सुख भेटैए

फलमे पैघ
कटहर होइए
आन फलसँ
मान कम होइए
सब्जी, पका खाइए

पूजा पाठसँ
मन शान्त होइए

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुदा कर्मसँ
सफलता मिलैए
सत्य कर्म धर्म-ए

उथर नदी
उधियाइत रहै
गहींर नदी
चुप्पे-गुप्पे रहैए
ज्ञानी गहींर होइ

मान सम्मान
लेल सभ जीबैए
अपमान नै
सहैत अछि कोइ
दुनू कर्मसँ होइ

आम लताम
केला, बेल, शरीफा
सेव, पपीता
तरबूज आ खीरा
सभक हरै पीड़ा

दूध, दही, घी
मधु, मखान
धान, पान, माछसँ
बढ़े मान सम्मान

मिथिला छी महान

पानिक मान
दुनियाँ करैत-ए
बिनु पानि नै
जिनगी चलैत-ए
धराकेँ खींचैत-ए

कारी कोइली
प्रीतमकेँ बुलाबै
अधरतियामे
कूहू कूहू करि कऽ
सभकेँ जगाबैए

तोंता-मेनाक
खिस्सा बड़ पुरान
जे सुनैत-ए
अचरजमे पड़ि
सोचि शोग करैए

राजाक दुख
जनता बँटैत-ए
प्रजाक दुख
बाँटैत नहि कोइ
दुख सहि मरैए

गामक बेथा
कथा नहि सुनल

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

नहि देखल
सहल नै जाइए
कहै छी नै बाँटैए

सभक सभ
केकरो कोइ नहि
सभ मिल कऽ
कण-कण जोड़ि कऽ
युग निर्माण होइ

माए गाएकैँ
सेवा सभ करियौ
कर्म धर्मकैँ
जोड़ि, मोह छोड़ियौ
सदा सुखी रहियौ

दुख सुखक
संगम बीच रहि
कल्याण लेल
अपन श्रमदान
अर्थदान करियौ

चंचल चित
मन धबड़ाएल
स्वार्थी बनि
माया बजार बीच
सभ अछि घेरल

केकरा लेल
कानब जे हमर
नोर पोछत
निष्ठुर बनल-ए
स्वार्थी बनि ठकैए

मोह मायासँ
दूर रहि कर्मकेँ
करैत चलु
कर्म धर्म बिनु नै
मीठ फल मिलत

परिश्रमसँ
सभ डरैत अछि
बिनु श्रम नै
भूख मिटैत अछि
नै हएत प्रगति

भोरक तारा
उगल भुरुकबा
गमकै फूल
भोर पहर घुमु
रहत मन खुश

माटिक घैला
पानि निर्मल करै
सोना नै शुद्ध

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

संत उपकारी आ
ज्ञानीक वाणि सुधा

आगि नै बुझै
हवासँ, बुझै दीप
प्यास नै बुझै
भरल सागरसँ
कूप मिटबै प्यास

मठ मस्जिद
नै मिलै भगवान
वन घुमने
नै मिलै देव धर्म
प्रभु बसैए मन

रोगीक रोग
दवाइसँ छुटैए
मनरोग नै
छोड़बैए दवा
केना छुटत रोग

नेत्रदानसँ
पैघ दान नै अछि
जीवन दान
रक्तदान भूदान
सँ कल्याण होइए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

सफलताक
करू नीक तैयारी
राति अपन
जागि करू तैयारी
प्रयास राखू जारी

देश खातिर
करब बलिदान
रक्षा करब
देशक छी कल्याण
काज छी ई महान

स्वर्गक सुख
नहि चाही हमरा
दुखमे मिलै
हरिदर्शन सुख
सुखक खान

मेहनतसँ
मिलै धन अपार
आलस अछि
दुखक पैघ बाट
काज करू विचारि

तीन बातसँ
राखब परहेज
मीठ बोलिया

चटगर भोजन
झूठसँ रहु कात

कन्यादानसँ
जगमे करू नाम
काज महान
समाजक कल्याण
नारीक छै उत्थान

पंच तत्वसँ
बनल छै शरीर
अनमोल छै
ई जिनगीक गाड़ी
अन्त किए होइ छै?

धानक बिआ
उखारि बोनिहार
गीत गाबैत
धान रोपैए खेत
सबहक खातिर

बच्चा कनैए
स्कूल जाइ खातिर
जरूरत छै
काँपी,कलम, पोथी
शिक्षाक छै जरूरी

दूध पीब कऽ
बच्चा पलैत बढ़ै
भविस बनि
उपकारी बनि कऽ
देश रक्षा करैए

माटिक मूर्ति
हिलै डुलै नै बोलै
किए मनुख
पान, फूल, प्रसाद
चढ़ा भक्त बनैए

मानव तन
लेल देवी देवता
तप करैए
दुर्लभ छै ई तन
देवोकेँ नै भेटैए

हाड़ माँससँ
बनल ई शरीर
नाश्वर अछि
की भेटैए तनसँ
मायामे फँसल-ए

राजा सेवक
जनता छी मालिक
लोक उनटे
बुझैए सेवककेँ
राजा तँ मालिक छी

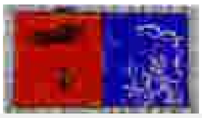
गरीब लेल
जेल जुर्माना अछि
नेताक लेल
कालाधन, खजाना
जनता छै दिवाला

सभ अपन
नहि कियो पराया
दुखक साथी
निभबे जे दोस्ताना
अनमोल खजाना

मोती मालासँ
शोभा बढ़ैत अछि
कंठी मालासँ
हरि भजन होइ
कोन उपयोगी छी

मजदुरक
श्रमसँ बनै टुटै
घर मकान

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मालिक छी महान
श्रमिककेँ नै नाम

चान सुरुज
अकासमे चमकै
अपने कर्मे
लोक चमकैए
जगमे नाम होइ

आगि जरैत
सभ देखैत अछि
मन जरैत
नहि देखैए कोइ
किए अन्तर होइ

पानिक बून
मिलि नदी बनैए
सींचे धरती
प्यास बुझै सभकेँ
दाम नै दइ कोइ

मोट रोटीसँ
पेट भरैत अछि
नीक पोथीसँ
ज्ञान बढ़ैत अछि
दुनू राखैए मान

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जरैत दीप
जगमग करैए
मुदा अपने
अन्हारेमे रहैए
जग हित करैए

देशक सेना
सुरक्षामे मरैए
देश गर्वित
मुदा परिवार तँ
शोकमे डुमल-ए

चोरक माल
सभ मिलि खाइए
उनटे चोर
फाँसी पर चढ़ैए
संगे कोइ नै जाइ

नाचे बानर
चौर खाए बबाजी
बानर कहै
माल अछि केकरो
कमाल करै कोइ

पढ़ल सुग्गा
बोली छै अनमोल
बन्द पिंजरा
कैद रहि कहैए
अजादी केना होइ

गाछक फल
सभ खाए जुराए
गाछ नै खाए
तैयो सभ फल
धर्महीत करए

धान पानसँ
मिथिलामे सम्मान
धोती-कुर्त्ता छी
गौरव पहिचान
स्वागतमे मखान

पकै फसल
कटनी दौनी होइ
कुइट, पीस
मधुर भोज बनि
सभक पेट भरै

बिनु खेने नै
पेट भरैत अछि
नहि देखने
नयन जुड़ाइए
नै ज्ञान मूर्खहोइ

प्रेमक बाट

पकैड़ सुख पाबै
स्वर्गक सुख
सफल जिनगीक
उत्तम फल अछि

हरिण देत
सियारक गवाही
दुनू भागि कऽ
जंगल चलि गेल
सजामे प्राण गेल

सौनक साग
भादवक दहीसँ
बँचल रही
आसीन कातिकक
शीतसँ बँचि रही

चंचल मन
चित्त घबराइए
जान जोखिम
पैर लड़खराइ
बाट नै देखाइए

चोर-चोर छै
मसियौत बनल
अधिकारी छै
पिसियौत बनल
प्रजा साधु किए छै?

आमक डारि
झुलुआ झुलै छेलौं
कोइली बोली
सुनि गीत गबैत
खुशीसँ हँसै छेलौं

बाग-बगीचा
लगबैत सींचैत
आम, लताम
खाइत जीबैत छेलौं
चैनसँ सुतै छेलौं

मोतीक माला
फेरैए धनवाला
हलुआ पुड़ी
खाइए दिलवाला
दूध बेचैए ग्वाला

खीरा छी हीरा
भोर पहर खाउ
नोन लगाए
साँझक पहर तँ
खीरा पीड़ा दइए

गंगाक पानि

ISSN 2229-547X VIDEHA

अमृत समान छी
सागर मिलि
नोनगर बनैए
पीबिलो ने जाइए

देश अजाद
मुदा हम गुलाम
भूखले पेट
केना जश्न मनबै
स्वतंत्रता दिवस

मधु मिश्री घी
तीनू तँ अमृत छी
तीनू मिलि कऽ
पैघ विष बनैए
खाए लोक मरैए

पुरान अन्न
रागीक पथ्य अछि
पुरान लोक
समाज सुधारक
सर्वहितकारी छी

सभ महग
किछो ने अछि सस्ता
मुदा देशमे
खून चून बेचैनी
सभसँ सस्ता अछि

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

खोजलोसँ नै
भेटैए भगवान
मन मन्दिर
बसैए भगवान
जे पूजे से महान

आखि रहितो
अन्हरा बनल अछि
केना खोजतै
ज्ञान दीप जरै छै
सेहो आनहरे छै

सत्य वचन
पहाड़ सन भारी
हिले ने डुले
झूठ आँखिक धूल
सत्य अग्निवाण छी

सत्यक सोड़ि
पताल पहुँचैए
झूठक जड़ि
रूइयाँ सन हल्लुक
हवा उड़ा दइए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पशु पक्षी छी
मनुखक हितैषी
नहि करियौ
शिकार बलजोरी
जीब छी हितकारी

फूल गमकै
नित्य बहै पवन
चिड़ै चहकै
ओशसँ भिजै तन
सभकेँ भावै मन

चना चनैक
चैत मासमे पकै
शानसँ खाइ
धुधनी सतुआ
दालि सुपाच्य होइ

शीतल पानि
बँचबै छइ प्राण
गरम पानि
लइए जानि प्राण
नै बकसैए जान

शीत चाटने
नै मिटैए पियास

हाथ चाटने
नहि मिटैए भूख
पानि मिटबे त्रास

घर मन्दिर
मनमे भगवान
श्रद्धा शक्तिसँ
ज्ञान इमान बढ़ै
कर्म धर्म कल्याण

सत्य बाजि नै
सभ करैए काज
हरिनाम नै
जपैए इनसान
जिनगी छै हराम

झूठ बाजि कऽ
ठगि खाइ बेमान
इमान बेचि
भगवानो बेचैए
अमीर कहबैए

कर्मक फल
सभ भोगैत अछि
अधर्म किए
करैए सभ जानि
छूटै नै छै प्राण

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

नदी मौसम
बदलैत रहै छै
नै बदलै छै
भाग्य सत्य मृत्यु
नै बिगाड़ै छै कोइ

बेटी धन छी
अनमोल रतन
सभक हित
समाजक विकास
देशक छै कल्याण

विद्या धन तँ
सर्वोत्तम धन छी
बिनु विद्या तँ
लोक पशुसन छी
विद्या ज्ञानक खान

धनमे विद्या
स्थाइ उत्तम अछि
नहि मांगैए
राजा रंक फकीर
नहि छिनैए चोर

गाम स्वर्ग छी
किए शहरमे
नरक सन

जिनगी बितबै छी
आयुकेँ घटबै छी

साए रोगक
एक रोगी बनैए
संयम किए
नहि करैए लोक
दवा खाए मरैए

खान पानसँ
करू रोग निदान
दियौ धियान
जड़ी-बुटी खाए कऽ
रोगसँ पाऊ छुट्टी

आत्मा शरीर
दुनू दुख सहए
आत्मा अमर
शरीर नाश्वर छी
एना किए होइए

हाड़ मांससँ
बनल ई शरीर
मरणशील
तँ किएक कुकर्म
करैए लोक जानि

ज्ञान बढ़बे

धन मान सम्मान
पाप घटबे
इमान, धर्म, यश
सत्य कर्म महान

चंचल मन
यौवन क्षणिक छी
दुख सुखसँ
जिनगी सजैत-ए
विद्या धन स्थायी छी

राम राज्यक
सपना देखलैन
महात्मा गांधी
मुदा रावण राज
कहिया खत्म भेल?

मौत, ग्राहक
इन्तजार नै करै
वलवान नै
मनुख होइत-ए
काल वलवान छी

मोह-मायामे
सभ फँसल अछि
मोक्ष मिलतै

सदगुण कर्मसँ
अधर्मी नर्क जेतै

रोजगारसँ
चलैत-ए जिनगी
नहि होइ छै
भूखमरी बैसारी
सभकेँ छै जरूरी

यौन शोषण
दहेज उत्पीड़न
भ्रूण हत्या छी
कैंसर सन रोग
बड़ पैघ चुनौती

जग सुन्दर
मनुख अज्ञानी-ए
आन जीवसँ
सीखब जरूरी-ए
ज्ञानीक कहब-ए

भेद कुभेद
बीच मनुख रहि
विष विषाह
बनि कऽ सतबैए
समाजकेँ तोड़ैए

जीव जीबक

सम्बन्ध अटुट-ए
जीबे जीवक
दुश्मन बनल-ए
न्याय की कहैत-ए?

आगू बढ़ब
आनकेँ पछाड़ब
पछुआएल
सभकेँ छोड़ि आगू
बढ़ब हिनता छी

झूठ वचन
साँच नहि होइए
सभ छी झूठे
जौं कहै एको साँच
से दुनियाँमे होइ

मनक मैल
भावना बिगड़ैए
दिशा बिगाड़ि
जिनगीक चालिकेँ
कुबाट पकड़ैए

खरकट्टल
जे रहए मनक
मैलक धब्बा
छुटल नै उपाय

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मन भेल कुपित

हिन भावना
चरित्र बिगाड़ैए
जीव जीवमे
भेद करि लड़बैए
दुखे दुख सृजैए

अद्‌भूत अछि
जगतक जे लीला
जीवे जीवकेँ
संघारक बनल
की उचित होइए?

श्रम करैत
जिनगी बितेलक
साग पातकेँ
खाए दुख सहल
केना सुख पावत

नीति कुनीति
बीच बेवस्था अछि
दू नजैरसँ
दुनियाँकेँ देखैए
दीन दुख सहैए

तकदीरमे
गरीबी लिखल-ए
दुख काटैले
जेना जनमल-ए
ईश्वरो कुपित-ए

केना भेटतै
सुख, जेकर दुख
जनमाऊ छै
सुखक छाहैर तँ
दूरेसँ भागल छै

कोसी कमला
बीच बलान बहै
निर्मल गंगा
स्वर्ग सन मिथिला
पवित्र धाम कहै

आम लताम
अनरनेबाक छै
उत्तम खान
धान पान मखान
मिथिलाक छी शान

कुकुर कहीं
आगि पकैए, ठक

कहीं उपास
कहैए धर्म दास
संत पड़ै उपास

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'

झारू-
मान नै केकर मन मानै छै
केकर मन मानै अपमान।।
अपनाबू सभ जीव जगतकेँ
पूरत अहूँकेँ ई अरमान।।
गीत-
शिक्षाक बौछार लागल छै
घर-घर पढ़ाइ-लिखाइ छै।-2
बड़ी सरम केर बात आबो
लोकसँ लोक छुबाइ छै।।-2

केकर लहु केकरासँ कम छै
सभ लहुमे एके दम छै।-2
श्रद्धा और सिनेहमे सबहक
बड़बैर हक देखाइ छै।।-2
बड़ी...।

जेकरा नै जीवनक आधार

की बुझतै मानव अधिकार।-2
ऊँच नीचक हथियार उठा कऽ
जगसँ लड़ै लड़ाइ छै।।-2
बड़ी...।

मानवताक शासन मानू
सभ मानवकेँ बड़बैर जानु।-2
जीबैक हक छै सभकेँ बड़बैर
अन्धोकेँ ई देखाइ छै।-2
बड़ी...।

q

झारू-
काल्हिकेँ के देखलकै बाबू
काल्हिक करिश्मा बड़ा महान।।
काल्हि हाथमे हेतै खप्पर
आ की करब अहाँ कंचन दान।।
गीत-
आब की कड़ी हम
सामने खड़ा सवाल छै।-2
जीनगी भेल दबाल छै ना।।-2

जँ फँसि जाइ छै ई मशला

की करबै होइ नै फैसला।-2
ऐ सँ वंचित नै कियो
राजा रंक कंगाल छै।
जी...।

भेटल समयसँ नै जवाब
कल्लर बनि जाइ छै नबाब।-2
या खोजि गलत हल
जीनगी करै हलाल छै।
जी...।

हल लालच केलक सवाल
जिनगी फँसि गेल ओझड़ी जाल।-2
आब के छोड़तै
केकरो कहाँ मजाल छै।-2
जी...।

उत्तर समय चाहै छै कम
जीयब या की घेरत जम
रक्षा करू विधाता
मौत जिनगी के सवाल छै।
जी...।

खोजै समय रहैत सच उत्तर
बिरला छै जगमे ई पुत्तर।
दुख से पाबै,

ISSN 2229-547X VIDEHA

जिनगी तेकर बबाल छै।
जी...।

q

झारू-
जागू बाबू देश बँचाबू
लबका खुनक बोलीसँ।।
जे मानवमे फुट कराबै
तेकरा मारू गोलीसँ।।
गीत-
आधा रोटी खेबै यौ
देशकेँ बँचेबै यौ।-2
ज्ञान-विज्ञानक डोर पकैड़ हम
दुनियाँकेँ नचेबै यौ।-2

देशमे पसरल भ्रष्टाचारी
गमन घोटाला अत्याचारी।-2
एकता के तलवार बना हम
सबहक घेँट कटेबै यौ।-2
आधा...।

सत् अहिंसा गाँधीसँ लेबै
हिंसाकेँ नै बढ़ए देबै।-2

सुख शान्तिक महल बना हम
दुनियाँकेँ बसेबै यौ।-2
आधा...।

सेवाकेँ जन-जन बुनबै
मानवताक मन्तर गुनबै।-2
जग अमन केर माला लऽ कऽ
घर-घर धूम मचेबै यौ।-2
आधा...।

q

झारू-
झारू बिनु नहि घरक शोभा
झारू बिनु नहि होएत हवण।।
हमरा बिनु नहि मन्दिर-मश्जिद
आर ने देशक संसद भवन।।
गीत-
झारूसँ जुनि घृणा करू
ई तँ अनुचित बात छी। -2
जइसँ मिलै छै जगमे शान्ति
तेकर हम शुरूआत छी।। -2

जइ घर नहि छै हम्मर आदर
तइ घर घुसतै दुक्खक बादर। -2
पएर पसारत रोग बेमारी

ओघर भूतक जमात छी। -2
जइसँ मिलै...।

की हमरा बिनु तनक शोभा
फुटतै की मन ऐ बिनु आभा। - 2
के कहौत हमरा बिनु मानव
केकर ई औकात छी। - 2
जइसँ मिलै...।

के नहि लइ छइ हमर सेवा
राजा रंक दानव आ देवा। -2
के गीन सकतै रूप-रंग हम्मर
सोचैवाली बात छी। - 2
जइसँ मिलै...।

q

झारू-
रहि नै गेल आजुक शिक्षामे
ज्ञानकर्मक महान उदेस।
भ्रष्टाचारसँ धनार्जण कऽ
जड़ीया बँचि गेल बाँकी शेष।।
गीत-
शिक्षा भऽ नै जाउ बदनाम
गै बेटी भार तोरापर छौ- 2

भैया बाबूक ठोरक लालीकँ
श्रृगार तोरापर छौ- 2

शिक्षासँ ले ज्ञान सुकर्मक
राख परख मानवता धर्मक। 2
निष्ठा नीति इमानक
मलार तोरापर छौ। 2
शिक्षा...।

शील शुशिलता गढ़ा-ले गहना
मानवता केर पहीरिले कंगना। -2
सिनेह प्यार सभ छोट पैघक
बेवहार तोरापर छौ। -2
शिक्षा...।

जगमे पसरल दहेज बेमारी
वैद्य बनै केर कर तैयारी।-2
कुष्ट समाजिक दहेजक
तलवार तोरापर छौ।– 2
शिक्षा...।

q

झारू-
भूल करै जँ वनक पंछी
पशु करै तँ औ छै बात।
ऐसँ वंचित जीव जगत केर

ISSN 2229-547X VIDEHA

मात्र छोड़ि कऽ मानव जात।।
गीत-
दुइए फूलसँ घर सजाबू
सुखी रहत संसार यौ।-2
करू नियोजित सभ कियो बाबू
अपन-अपन परिवार यौ।-2

दू गोटे हम हमरा दूटा
लक्ष्मी बेटी आ भोलबा बेटा।-2
नीकसँ मिलतै शिक्षा दिक्षा
रोटी कपड़ा दुलार यौ।-2
करू नियोजित...।

कान धरू विज्ञानक हल्ला
भरल जोगार छै एकरा झोला।-2
नहि तँ होएत ककोड़बा वाणी
खोधि कऽ खाएत कपार यौ।-2
करू नियोजित...।

जनसंख्याँ केर बोझ भेल भारी
नाकोदम केलक बेकारी।-2
आबो नै चेतब नर नारी
फेल कऽ जाएत सरकार यौ।-2
करू नियोजित...।

q

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

झारू-
सुति उठि लागू भोरे बाबू
माए-बाबूकेँ गोड़ यौ। एकड़ा सन जगमे नै कियो

सेवापर दियौ जोर यौ। गीत- माए गइ बोल तोहर छौ, बाइबिल वेद कुरान गइ। शान्तिकेँ बरदान गइ ना-2 तूँ तँ जगमे अनुपम, केकर उपमा देबै हम। सौंसे दुनियाँमे नै, कियो तोरा समान गइ। शान्ति...।

आगू तूँ पाछू भगवान, जगमे तुहीं एक महान। तोरे नाओंसँ पुज्जित मन्दिरक भगवान गइ। शान्ति...।

तूँ तँ ममता केर अकास। पहिल गुरु केर प्रकाश। तुहीं जगमे देखेलही, जीबै केर सामान गइ। शान्ति...।

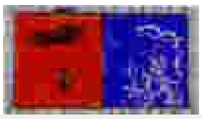
तूँ तँ अल्ला, ईषू, महेश, कार्तिक गणपति और गणेश। माए गइ चरण तोहर छौ, गंगामे स्नान गइ। शान्ति...।

q

झारू-
गरीब भूखल कम रहै छै
भूखल बेसी रहै धनवान।
गरीब भूख बस सुखल रोटी
अमीर भूखल हीराक खान।

गीत- तूमलोग केना कऽ जीबतै ओतए आपलोग जतए बेमार छै। असंतोषमे माथ दुखाइ छै स्वार्थक चढ़ल बोखार छै। अहाँ बाबू बनू बरूआर हम छी सेवा-ले तैयार। मान-सम्मानमे सभकेँ बरोबैर जीबैक अधिकार छै। असंतोषमे......।
आप उरू मोटर गाड़ी साइकिल हमरो रहए तैयारी। एक दोसरक घाट उतारनाइ दुनियाँक बेवहार छै। असंतोषमे......।
अहाँ पाबू पुआ-खीर चुल्हा बुझै ने हमरो भीड़ इज्जतसँ दू वक्तक रोटी हमरो तँ दरकार छै। असंतोषमे......।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

अहाँ पहिरू सूट-सफारी फाटए हमरो ने पढ़िया साड़ी
तन झाँपि कऽ हमहूँ जीबी हमरो तँ सरोकार छै। असंतोषमे......।
अहाँ शोभा महल अटारी झोपड़ी हमरो रहै तैयारी। सीर छुपबैले छत होइ ऊपर हमरो तँ दरकार छै। असंतोषमे...।

q

झारू-
की करी अपनेक सेवा
घर खाली किछु छै नै धन।
बैसू बिछा दी अहाँ नीचाँ
श्रद्धा रंजीत अप्पन मन।।
सुआगत गान-
अर्पण करै छी चरण-कमलमे
करू सुआगत स्वीकार यौ।
हम अदना सन धुल घरा कऽ
अहाँ छी देव अवतार यौ।-2

दर्शन देलौं हमरा हुजुर
नाचि उठल मन मजूर।-2
मनसा पुरलैन हमर विधाता
सुनलैन हमर पुकार यौ।-2
हम अदना...।

अहाँ चरणकैं धुऐत धुल
मनमे समा रहल नै फूल।-2
पावन भेल हमर घर-अँगना
हम भेलौं साकार यौ।-2
हम अदना...।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

घर हमरा नै पकवान
सुखल रोटी छै नीदान।-2
पाबि बिसारब देव अतिथि
हम छी गरीब अपार यौ।-2
हम अदना...।

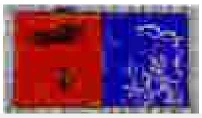
q

झारू-
सफल करब जँ जिनगी बाबू
कसि पकड़ू ई दू आधार।
पहिला जानू सादा जिनगी
दोसर जानू उच्चविचार।।
गीत-
चालि चली सादा निमहे बाप-दादा-2
कहि गेला बुढ़ पुरनियाँ अहीमे छै फायदा-2

देखती नै खाउ पीबू देखती नै पीनहुँ-2
रहू औकात धरि अपनाकेँ चिन्हुँ-2
जिनगी आनन्द हाएत हम करै छी वादा।-2
चालि चली...।

दोसरकेँ नीक देख किन्नौं नै जरू-2
अपनो आनन्द रहू दोसरो-ले मरू-2
ज्ञानी पुरुषक यएह छी कायदा।-2
चालि चली...।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

फाटलकँ लाज कोन मैले लजाबु।-2
झूठक वेपार छोड़ि सच गाल बजाबू।-2
बात करू कम-सम काम करू ज्यादा-2
चालि चली...।

परक उपकार करू, करू नहि निन्दा।-2
जीवितेमे मरू नहि मरि कऽ रहू जिन्दा।-2
जिनगी शीतल करू किनू नहि रौदा।-2
चालि चली...।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

नन्द विलासराय-

दहेज
दहेज पाप छी
दहेज अभिशाप छी
दहेज छी
बड़ पैघ कलंक
सभ मिलि करू
ऐ समस्याकँ अन्त।

दहेज समाजक लेल
भऽ गेल अछि कोंढ़
दहेज अछि एड्सोसँ
पैघ रोग

दहेजसँ बढ़ि कऽ
नै अछि कोनो रोग
जे भोगने अछि
एकर भोग
ओकरा अखनो तक
अछि तेकर सोग।

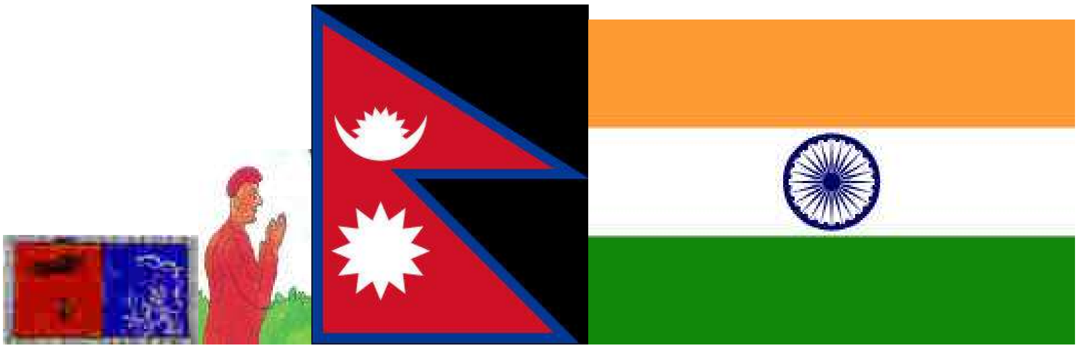
दहेजक कारण बेटी मरैए
दहेजक कारण बेटी जरैए
फँसरी लगाकऽ जान गमबैए
धार-पोखैरमे
सेहो डुबैए
दहेजेक कारण
कन्या-भ्रूण
हत्या होइए
आउ, सभ मिलिकऽ
ऐ समस्यापर विचारू
दहेजकेँ अपना
समाजसँ खिंधारू
जे कियो दहेजक
मांग करए
ओकरा खड़्डा-बाढ़ैन
आ झारूसँ मारि भगाउ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

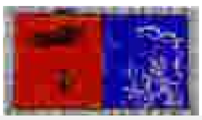
मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

 ५ जुलाई २००४ केँ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**जैठाम न्यायालयक न्याय अबिसवासू भऽ जाए,
तरवन तँ लड़ाइ-झंझटक वएह रूप ने पकड़त
जे खाइ-पीबैले शहर-बजारक कचहरी रहऽ दियौ
आ रगड़ा-रगड़ी समाजमे करी।
जँ से नइ करब तँ समुद्रक
अमृत थोड़े भेटत।
तइले समुद्र मथै पड़त।**

307 दफाक मुकदमा निचला कोर्टसँ किछे दिनक पछाइत सी.जी.एम. कोर्टमे चलि गेल। जहिना लोक रोगाएल अछि तहिना परिवार रोगाएल छै, परिवारे किए समाजे रोगा गेल अछि। जखने गाछक जड़िमे गराड़ धरत तखने नसे-नसे डारियो सभकेँ रोगेबे करत किने। कोटो-कचहरी तइसँ किए अबंच रहत। नस-नसमे रोग घुसले अछि, जइसँ जिनगियो बेठेकान भऽ गेल छइ। जैठाम न्यायालयक न्याय अबिसवासू भऽ जाए, तखन तँ लड़ाइ-झंझटक तँ वएह रूप ने पकड़त जे खाइ-पीबैले शहर-बजारक कचहरी रहऽ दियौ आ रगड़ा-रगड़ी समाजमे करी। जँ से नइ करब तँ समुद्रक अमृत थोड़े भेटत। तइले समुद्र मथै पड़त। यएह सभ सोचि केसकेँ बीस बर्ख तक ऐ आशासँ जे पच्चीस-तीस बर्खमे जँ नीचला कोर्टमे अँटकत तँ ऊपरका जाइत-जाइत साठि-सत्तैर बर्ख भऽ जाएत। जिनगीए केतेटा अछि, तखन तँ भेल लड़ाइ-झगड़ा, एक आइटम काज। बाइस बर्खक पछाइत कोर्टसँ केसक फैसला भेल। रोगाएल जेहेन फैसला हेबा चाही सएह भेल। सभकेँ सजा भेल। सभ जेल गेल।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

अपन पढ़ैक धार तँ नीक रहल, एहेन नीक रहल जे कोशी-कमला जकाँ अपन पेटकेँ के कहए जे आनो आनक चास-बास धरिया गेल छल जे लिखैक बाट छोड़ि मंचपर बजैक बाट पकड़ा देलक।

लिखबो-ले वौस चाही बजबो-ले वौस चाही। सुवोधनीक मन धारक मोनिक पानि जकाँ नचलैन, नचिते मनमे उठलैन, गाँधीजीक शहादत दिवसपर देल गेल भाषण। गाँधीजी एशिया महादेशक भारत, आ अफ्रिका महादेशक बीच गुलामीक विरोधमे महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फुकलैन। की ओ नइ जनै छला जे गुलामीक केहेन-केहेन जाल अछि। गाँधीजीक ओही विचारकेँ बुझै पाछू अपन समय चलि गेल। एशिया महादेशक सउदी अरब, यमन, ओमान, भूटान लाओस जहिना, तहिना अफ्रिकाक माली, वरकिना, नाइजर, टागो, सेनेगल मनकेँ घेरि मुड़ीकेँ गोंति गोंतिया कहा-बधी करा नेने छेलैन जे गाँधीजीक शहादत दिवसपर पोथीक रूपमे लोकार्पण करब, कहाँ भेल! किए ने भेल?



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

वेद तँ वेद छी, अक्षर ब्रह्म। मुदा वेदोमे भेद तँ अछिए। जँ से नै अछि, तँ एते रंगक वेद आ एते वेदवेत्ता केना भेला कि छैथ?

भेदो उचिते ने, जेहेन देश तेहेन भेष। जेहेन उपारजन तेहेन भोजन, मुदा उपारजनो तँ प्रकृते अनुकूल, तँए जेहेन भोजन तेहेन जिनगी...।

मुदा जखन देश-देशक माटि-पानि, उपजा-वाड़ी रंग-बिरंगक अछि तखन तँ जिनगियो ने सभ रंगक हएत चाहे लाल हुअए कि कारी! आ जखन जिनगी सभ रंगक हएत तँ जीबैक विधो-बेवहार ने सभ रंगक हएत। जखन बीध-बेवहार फर-फराक हएत तखन तँ वेदोमे भेद हेबे करत किने...। पड़ले-पड़ल सुकल भाइक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे जे बात बुझए चाहै छी से तर पड़ि गेल आ आने-आने ऊपर भऽ गेल! तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जइ चीजक खेती करब तइमे तइ चीजकेँ छोड़ि बाँकी- ओ चाहे उपयोगीए वस्तु किए ने हुअए- सभटा घासे भेल किने। बिना ओकरा हटौने जजात अपन अनुकूल नइ ने हएत। ओ तँ तखने अनुकूल भऽ सकैए जखन दोसर ओकर माटिक शक्ति नइ लइ...।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

ओना, तीन मासक दौड़मे, जाबे धरि दर्जन भरि सी.आर.पी.क ड्यूटी रहल, समाजकेँ बहुत लाभ भेल। वारन्टीक पकड़-धकड़ तेते नइ भेल, मुदा समाजक दर्जनो उचक्का फँसि गेल।

जहिना जालमे घोंघा-सितुआ ओंघराइत फँसि जाइए तहिना भेल। सभकेँ अन्दाजमे आएल जे जाबे गामक उचक्का नइ सोझ हएत, ताबे समाज केना सोझ डारि पकड़त। मुदा सोचब, करब आ हएबक बीच तँ किछु-ने-किछु दूरी बीचमे अछिए। अही बीचक फाँकमे भेल ई जे रंग-रंगक घटना फँसल। से दुनू दिससँ फँसल। के केकर शासन करत। लड़की संग घटना फोर्सो एकटा परिवारक संग केलक। तहिना गौओंक बीच भेल। तीन मास बीतैत-बीतैत शासन बदैल गेल।

बहरबैया मालिकक सात कट्ठा घराड़ी खेत। एक गोटे खेत खरीदैक गप केलैन। बेना-बट्टा भऽ गेल। दू फरीकक हिस्साक जमीन। दुनू फरीक बिकरीक गप तँइ कऽ नेने छला। रजिष्ट्रीक डेट बनल एक फरीक रजिष्ट्री ऑफिस पहुँचबे ने केला।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

मने-मन भेल- डायरीसँ ठेकान नै पेब सकै छी। एक तँ ओहुना ओ अधखरूआ होइए, दोसर अपने लिखनाइए छोड़ि देलौं। तखन? हँ! दोसर ठेकान आरो भऽ सकैए। ओ अछि छठिहारीक दूध। मुदा ओहो तँ डुमले पोखैरक पानि भेल! छह दिनक बच्चाकेँ की ठेकान रहतै जे छठिक दूध केहेन होइ छै, भलैँ छठम दिन किए ने ओही दूधपर ठाढ़ भेल रहल हुअए। ओहो बेठेकाने अछि। तखन? हँ, तखन तेसरो अछि- पेटक मल आ जन्मक मल। मुदा ओ तँ प्राण छुटैबेर अपन परिचए दइए...।

ओह! ओहूसँ भाँज नै लगत, ओ तँ भविसक भेल। तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहियासँ अप्पन ठेकान अछि तहीसँ ठेकना ली। मुदा ओहो तँ बेठेकाने अछि। सभ दिन नवके-नवके भेँट होइत गेल, मुदा एते तँ ऐछे जे जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककेँ ओते पलखैत छै, तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तखन ओहन शीलापटकेँ राखबे केते नीक हएत?

मुदा लगले सुकल भाइक मन घुरि गेलैन। घुरि ई गेलैन- भाइ! सबहक ई दुनियाँ छी, सबहक दिन राति छी, तैसंग कि लोको-वेद नइ छी। मुदा ओ तँ तखने ने हएत जखन लोक-वेदकेँ खोद-बेद करैत रहब। ओना, खोदो-बेद असान थोड़े अछि। खोदो जहिना पहाड़सँ समुद्र धरि अछि तहिना ने वेदो अछि। पहाड़क पाथर खुनी आकि गावीस माटि खुनी, घी जकाँ पीघलैत पाथर खुनी आकि झहरैत झरना-बहैत धार खुनी, चाहे ओइसँ बनल समतल भूमि–गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान–खुनी आकि सभ धारक संगोरल गंगासागरक घाट खुनी, बंगालक खाड़ी खुनी आकि प्रशान्त महासमुद्र खुनी। केते खुनब..! केते खोदब..!



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

दिन भरि तँ दर्जन भरि सिपाहीक आगू हजारो सिपाही मर्द-औरत समाजमे ठाढ़ अछि, मुदा राति तँ राति छी। तँए छबो गोटे गामसँ एक किलोमीटर हटि गामेक गाछीमे बिसवासक संग राति बितबै छल।

समाजमे संक्रमणक स्थिति पनपए लगल। गामक गाड़ीक चक्का केमहर मुहेँ घुमि चलत? जेहेन चलौनिहार रहत तेम्हरे मुहेँ ने चलत। राघोपुर गामक एक दिनक एकटा केसक मुकदमाकेँ के कहए जे सत-सत, अठ-अठटा केस हुअ लगल। भरि दिन थाना राघोपुरक लोकसँ झँपाएल रहैत, गामोमे तहिना दू-चारि-पाँच ठाम पटका-पटकी, थापर-मुक्का आ लाठी-फराठी चलिये जाए। बेवस्थाक यएह धुरी छी। जे बेवस्था घँसाइत-घँसाइत एते घँसा गेल अछि जे डेग भरि आगू मुहेँ ससरब कठिन भऽ गेल छै, तेनामे बदलाव छोड़ि दोसर रस्ते की छइ। एक दर्जन सी.आर.पी.क चौबीस घन्टाक ड्यूटी प्रशासनिक अफसरक संग गाममे भऽ गेल। मुकदमाक धारो दू-दिसिया भऽ गेल। दू ग्रुपक बीचमे एहेन स्थिति बनौल गेल जे एक दिस जँ मच्छरो ने मरैत तेकरो बदला मर्डर केस होइत, तँ दोसर दिस हथियारसँ कपारो कटल रहैत तँ ओकरा लाठीए बना देल जाइ छल, स्थिति भयंकर बनऽ लगल। विस्फोटक बनऽ लगल। न्यायालयक प्रति सुबल सबहक बिसवास बढ़ल। थानाक वहिष्कार ऐ शर्तपर केलक जे आगूक कारवाईमे थनोक स्टाफकेँ लपटौल जाए। जे बेवहारिक रूपमे तँइ भेल। छबो संगीक संग सुबल मनमे ठानि लेलक जे गाम नइ छोड़ब, गाम छोड़ब पाछू हटब भेल, से नइ हटब।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

थानासँ कोनो जब्त वस्तुकेँ छोड़बैमे महीनोक चक्कर लगबए पड़ै छइ।

एक तँ पुलिस प्रशासन अपने लोभे परमोशन-ले लोभाएल जे जाधैर जी-जान लगा काज नइ करब ताधैर खरकाह केना बनब। जखने खरकाह बनब तखने ने अवसर हाथ लगत। न्यायालयमे मुकदमा पहुँचते पुलिसक सिरचढ़ भेल। साते दिनक भीतर मारनिहार कोर्टमे हाजिर भेल। ऐ खियालसँ जे औवेल मुदालह छी जिला न्यायालयसँ जमानत हेबे करतै, पछाइत बाँकी मुदालहक ओही आधारपर जमानत भऽ जाएत। मुदा पुलिसक कारवाइ एते तेज भेल जे सातमे दिन मुदालहक घरमे जब्ती-कुर्की भऽ गेल। सुबलक घरक केबाड़-चौकी आदि जे जब्त भेलैन से तँ भेबे कएल जे खेतीक दमकल, जे सिंचाइक साधन छी, ओहो जब्त भेल। जे दू सालक पछाइत आपस भेल। दू साल लगैक कारण भेल जे मुकदमाक सघनता। एक-ने-एक वारन्ट बारहो मासक रहबे करै, जे से थानाक रस्ता सुबलक बन्न रहल।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि

दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...

तैठाम देखनिहारोक तँ किछु दायित्व

बनिते अछि..!

अपन पितापर सँ नजैर हटि सुवोधनीक राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधीपर गेलैन। जहिना सिनेमाक उन्टा रील नचैत तहिना गाँधी बाबा सुवोधनीक मनमे नचला। गाँधी बाबा अपन लीलसा पूरा कऽ लेलैन। हुनक लिलसा रहैन जे शहीद होइ, जे भेलैन। मुदा हुनके मंचपर अपन कएल संकल्प केना राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया रहल अछि..?

देशक सटले सीमानक कातक देश भूटान अछि, जैठाम रेलगाड़ी नसीव नइ भेल। छियालीस हजार छह साए वर्ग किलोमीटरमे पसरल देशक पनरह-सोलह लाख देशवासीक भाग्य निर्माण, तहिना सउदी अरब जे भूटान जकाँ सटल नहि मुदा महादेशक दूरियो नहि, सउदी अरब, यमन, ओमान लाओसटा नहि अफ्रिकाक माली जे बारह लाख चालीस हजार एक साए बियालीस वर्ग-किलोमीटरमे पसरल देशक अठहत्तैर लाख लोकक जिनगी, जइमे अदहासँ बेसी जमीन मरूभूमिये अछि, अदहामे सहेल सवाना घास उपजैए, तहिना बरकिना जे दू लाख चौहत्तैर हजार एक साए बाइस वर्ग किलोमीटर जमीनमे पसरल सरसैठ-अरसैठ लाख लोक ओहने ठाम ने अछि जैठाम एक दिस सहारा मरूभूमिसँ गुजरैत सर्द हवा जीवन-मरणकेँ सदिकाल झुलबैत रहैए। मुदा तैयो गिनीक मानसूनी हवा जीवनो तँ दइते छइ। तहिना नाइजर, टोगो इत्यादि-इत्यादिक अछिए। 'इत्यादि-इत्यादि' सुवोधनीक मनमे उठिते रहैन तखने सासु दरबज्जापर सँ आँगन आबि आदेश दैत कहलखिन– "कनियाँ, बुड़हाकेँ अबै बेर भऽ गेलैन, तँए पहिनेसँ अपन ओरियान-बात कऽ लिअ।"
सुवोधनियोँकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अखन तँ अँगने नहि दरबज्जोक मालिक साउसे छैथ, बजली– "अखनो बुड़हे सोहाइ छैन मुदा चारि बर्खक पोती नइ सोहाइ छैन।"
पछड़ैत कामिनी कनी पाछू घुसकैत बजली– "बुड़हा कि कम सियाखी छैथ अपनो गुप-चुप खेनहि-पीनहि हेता आ पोतियोकेँ खियौनहि हेता की।"
एक संग दुनू- सासु-पुतोहु-क आँखि, कान, विचार आ मुँह सम बनैत ठहाका मारि आत्मसात करए लगल।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जहिना दूध-पिण्ड होइए तहिना पानि-पिण्डसँ लऽ कऽ भक्खो, बगिया धरि होइते अछि...।

..बगियो की वगिया छी, रंग-रंगक बगिया अछि, जेते लोक तेते बगिया ने अछि। कियो बगूरक गाछ रोपि बगुरवगिया बनबैए तँ कियो फूलक गाछ रोपि फूलवगिया लगबैए तँ कियो फलवगिया लगबैए। मुदा तँए कि ईहो सोझ-साझ अछि। जँ तीनियेँटा रहैत माने बगूर, फूल, फल- तैयो नीक रहैत। सेहो ने अछि, घोदा-घोदे तीनू अछि। जहिना बगूरमे काँट तहिना तहूसँ मोटगर काँट बेलमे आ टाभ नेबोमे अछि। फूल-पात जहिना बगूरमे तहिना पातो आ फूलो सैनीमे अछि, भलेँ बगूरक लस्सा आकि टुस्सा कहै जे तोरासँ नीक छी, मुदा काँट तँ नमहर ऐछे! तइसँ नीक ने सैनी, जेकर काँट छोट छइ। तहिना ने फूलोक अछि जे एकटा धरतीपर फुलाइए तँ दोसर अकासोमे फुलाइते अछि आ तहिना ने फलोक अछि जे एकटा खेने पेट भरैए तँ दोसर पेनौं तँ मन खुशियाइते अछि..!

ज्योतिकेँ घरसँ निकलैमे पनरह मिनट समय बाँकी अछि, सुवोधनीक सिरे कोनो काज पछुआएलो नहियेँ छैन, तइसँ मनमे खुशी छैन्हे। देवचन अपने कनी पछुआएल छैथ, ओना, समैयक हिसाबे ओहो नहियेँ पछुआएल छला, धोती-कुर्ता पहीरि नेने छैथ, चद्दैर आ जूता खाली ऊपर-निच्चाँ ओढ़ब-पहीरब पछुआएल छैन। ज्योतिक ज्योतिमे अपन ज्योति मिलैबते सुवोधनीक मन बिहुसल, बिहुसिते बकार फुटल–

"की महाभारतक अर्जुन जकाँ अपन लक्ष साधि सकलौं। मनमे की रोपि जिनगी जीबैक सोचने छेलौं आ की भोगि रहल छी! आकि विचार हेरा गेल? नइ विचार हारि गेल। हारबो ने कएल, वौआ गेल!"

'विचार हेरा गेल आकि हारि गेल' ऐठाम आबि सुवोधनीक बकार बन्न भऽ गेलैन। बन्न होइक कारण भेलैन एक संग मोती-झाबा फूल जकाँ एकेबेर विचारक घोंदे फुला गेलैन। विचार हेरा गेल, कि हारि गेल, हरण भऽ गेल आकि दहन भऽ वौआ गेल...! सुवोधनी अकवका गेली। तैबीच देवचन दरबज्जेपर सँ चिल्होरि जकाँ टाँहि देलखिन–

"ज्योति ई इ इ..!"



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ हटल रहैत अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं।

बच्चा रही मन खाली रहए असथिरसँ मनमे पइस गेल। मन बेसी भरलो ने रहए जे उमटाम होइत। खाली रहए घोरि-घोरि पीबए लगलौं। अखनो मोन अछि। मुदा मोनेटा अछि! मोनेटा किए ने रहत? जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ तँ हटल रहिते अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं। एकर माने ई नइ ने भेल जे सटल नै रहलौं। हँ! मनसँ सटल रहलौं कर्मसँ हटल रहलौं, तेतबे ने भेल? आ तेतबे किए भेल, जनकपुरक जनक बाबाक संकल्पित धनुष उठबैक कुबत नै भेल, सएह ने। अयोध्यासँ सजल आएल बरियाती जनकपुरमे नै हेराएल से कि नै बुझल अछि। बुझले अछि। तँए कि दौजी बरियाती रहैथ सेहो ने। मुड़हन रहैथ, जे जनकपुर आबि ने धोखा खेलैन? जँ नइ खेने रहितैथ तँ डोमक घरकेँ किए जनकक सीता बिआहक बरियातीक बास-स्थल बुझितैथ? ओ की कोनो अयोध्यासँ लऽ कऽ आएल रहैथ आकि जनकपुरेक सज-सजिया, हेल-मेल आ विधि-बेवहार देख बुझलैन। जँ बुझल रहितैन तँ...।

भरिसक हुनका मनमे ई तँ ने भेलैन जे बेटा जन्मसँ लऽ कऽ पिण्डदान तकक हकदार अछि, गारि पढ़ियो कऽ आकि सुनियों कऽ, बेटा सबदिना भेल, जबकि बेटी जनगीक एक कालखण्डक। माने बिआहसँ पूर्ब धरिक मात्र!

तहूमे समाजो एहेन बहुरंगी अछि जे कोनो विचारकें बुझैए ने चाहैत। कन्याँगत अपना कन्याँकें जेते बेसी पढ़ा-लिखा नीक मनुख बना दुनियाँक रंगमंचपर अबै जोकर बना संगबे देथिन तँ संगबैयेक कोनो ठेकान नहि! एक तँ अपन जिनगीकें काटि-छाँटि नीक अध्ययनक बेवस्था बेटीकें करब पछाइत जखन संगी तकैले जाएब तँ जेते सेवा बेटीक केने छिऐ सभ पानिमे जा कहत जे बाबू अहाँक ई दोख नइ जे हमरा पढ़ेलौं, दोख ई जे समाज बेटी-जातिकें विद्यासँ वंचित रखि अपन बुधि-विवेक जगै ने देलकै। जँ जागऽ देल जाइतै तँ रूपक संगी गुणो होइतै, मुदा से कहाँ अछि। केतौ रंग-बेदरंग करैत तँ केतौ अर्थ वेदरंग करैत समाजेकें बहुरंगी बेदरंग बना देने अछि। जँ कन्याँकें घरसँ निकालि पढ़ऽ देबैन तँ पर्दाक पाठ पढ़ा अनुचित कहल जाइ छै, तँ केतौ संवेदनशीलाकें कठोरशीलामे जोति जिनगीक भार कन्हापर लटका देल जाइ छइ। हमर संवेदनशीलताकें पिता जानि कऽ जब्बह केलैन आकि कोनो वाध्यता छेलैन। बीचमे बाजब सुवोधनीकें उचितो तँ नहियें कहल जा सकै छइ। अभिभावक किछु छैथ तँ हमरासँ बेसी अनुभवी छैथे, मुदा तँए कि ओहो जानि कऽ गरदैनमे छुरी चलौने हेता? केना कहबैन, जनमदाता छैथ।

मुदा हमर संवेदनकें ओ तखन आँखिक सोझक ताखपर रखि विचार केलैन जखन लेन-देनमे प्रोफेसर पति सुवोधनीक संगी बनि जाइ तँ की हर्ज। समाजोक बीच लोक-लाज तँ बँचल रहत। प्रोफेसर माए-बापक बेटी, प्रोफेसर पतिक संग रहत तँ कि अपना जिनगी सदृश सुवोधनीकें नहि भेटतै, जरूर भेटतै...।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

परिवारक गारजनी साठि बर्खक देवचन अपने दुनू परानी हाथमे रखने छैथ मुदा अपना सन पत्नी नहि छैन। दुनूक दू गति-मति तथापि पति-पत्नीक बीच जिनगी।

पत्नी- कामिनी- परेखी तँए काजसँ परिवारकेँ अँकैत। अपन दुनू परानीक काज कामिनीक मनकेँ खुशी रखनहि छैन। किए ने रहतैन, गाममे दुइए गोरे प्रोफेसर बनला, तइमे एकटा तँ अपने बेटा छैथ। बेटा- रूपचन- गामसँ हटि पनरह किलो मीटरपर कौलेजक प्रोफेसर छथिन। मोटर साइकिलसँ अबै-जाइ छैथ। ओना, दुनू गौंआँ ओही कौलेजमे काज करै छैथ मुदा दुनू दू टोलोक आ दू जातियोक। तँए परिवारिक जिनगीमे अन्तर सेहो छैन। दुनूक पत्नियोँ बी.ए. पास मुदा सुवोधनी घरेमे घुरियाएल छैथ, जखन कि सरोजनी हाइ स्कूलक शिक्षिका छैथ। नोकरीक पाछू सेहो दू कारण, सरोजनीक परिवार निच्चाँसँ उठैत तँए नोकरीकेँ जीविकोपार्जनक साधन बुझि करैत, मुदा सुवोधनीक सम्पन्न परिवार, तँए महिलाक बीच नोकरी-चाकरीकेँ निकृष्ट नजैरसँ देख निषिध बुझल जाइत अछि। एक तँ ओहुना नोकरी-चाकरी हेय छीहे। एक तँ अपन सम्पन्न परिवार कामिनीक तैपर बेटोकेँ नीक कमाइयो आ प्रतिष्ठो तँ छैन्हे। ओना, ज्योतिकेँ विद्यालयमे प्रवेश जहिना सुवोधनीक मनमे नचैत तहिना कामिनियोँक मनमे, मुदा दुनूक दू-दिशाह नाच छेलैन। कामिनीक मनमे नचैत जे अपना बेटी नइ रहने परिवारमे विद्याक प्रवेश तँ पुतोहुए-जनीसँ भेल, मुदा अप्पन परिवारक चमकी ज्योतिमे चमकैत देखबे केलैन। अपने कामिनीकेँ एको अक्षरक बोध नहि। पोतीक संग पतिकेँ विद्यालय गेने दरबज्जा खाली भइये गेलैन, जे कामिनीकेँ पसिन्न नहि तँए आँगन छोड़ि दरबज्जे पकैड़ लेलैन। असगरे सुवोधनी आँगनक पुबरिया घरक ओसारक चौकीपर देवाल लगल ओंगठल, मने-मन अपन माता-पितापर नजैर देलैन। की जानि माता-पिता पढ़ौलैन, आ की पाबि रहल छी..!

'नीन टुटैपर अछि आकि अखन रहैबला काँच अछि?'

सभ बुझिते छी जे जखन एक्के अबाजे नीन टुटैए तखन ओ टुटैये-टुटैपर भेल आ जखन दू-चारि हाके वा हकवाहिसँ नीन टुटै, ओ भेल काँचोमे खिंचा काँच। कहैले ते ईहो कहल जाइए जे केकरो नीन मोट होइ छै आ केकरो पातर। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब ईहो छैन जे जगलो रही आ जँ कियो बाहरसँ नाम धऽ कऽ सोर पाड़ए तँ एक्के बेरमे उतारा नइ दिऐ। ओ भूतो-प्रेत रहैए आ मलो-मलेछ रहिते अछि। ओना, सियनगर चोरो नइ रहैए सेहो बात नहियेँ अछि। गुँहचोरा सिनकट्टा ने पछुआरमे सीन काटि घर पैसि घरक समान चोरा लइए मुदा सियनगर चोर तँ से नइ करत। ओ तँ यएह ने करत जे एक दिस पूजी विहीन लोक जे मिथिला सन धरतियो आ माटियो-पानिकेँ–जे दुनियाँमे सभसँ नीक अछि–छोड़ैले तैयार अही दुआरे अछि जे पूजी नइ अछि जे गुजर चलत आ दोसर दिस जे किछु जीवनक मुख्य अंग अछि ओकरा कपैट-छपैट असली-नकली नहि बुझि एजेन्टक भाँजमे पड़ि अपन पाइक संग अपन जिनगी सम्हारैक बाट छोड़ि, सभ किछु ओकरे सभकेँ दइए जेकर ओ नोकरी करैए। एहने-एहने जाल-फाँस लगौनिहारे ने सियनगर चोर भेल।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन। नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन। करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

'एहेन अहाँ काबिले किए छी जे बुढ़िया-फुसि केसमे फँसल छी?' मुदा से बात नहि अछि अपनो इच्छा अछिए जे जेते जल्दी सम्भव हुअए तेते जल्दी कोर्टसँ फारकती ली मुदा से कोर्टो बुझए तखन ने। तहूमे बुढ़िया-फुसि केस जे तीस साल पुरान अछि। बुढ़िया-फुसि केस ऐ दुआरे कहलौं जे एकटा जमीनक–माने तीन कट्ठा जमीन अछि जइमे घर-दुआरसँ बाड़ी-झाड़ी धरि अछि–रगड़ाक-झगड़ा अछि। दखल-दिहानीक बात अछि। दुनू पक्ष गामसँ बहरा बंगलोरमे नोकरियो करैए आ ओत्तै घर-दुआर सेहो बना लेलक। जहिया गाममे छल तहिया विवाद भेल, मुदा आब तँ दुनू अपने छोड़ि बंगलोर चलि गेल आ तैयो कहैए हमरा दखलमे अछि। ओइ बाड़ी-झाड़ीमे फुलबारियो लगौने छी आ तीमनो-तरकारी उपजबै छी। से दुनू कहैए।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जे मनुख केलक-धेलक किछु ने आ खाइत-पीबैत, सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता लेलक वएह जिनगी ने रीब-रीबाएले रहि गेल।

जिनगी तँ ओ ने भेल जे अपन भरण-पोषण करैत किछु आगू धरि डेग उठबैत चलए। ओना डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। जेना एक भेल आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीचमे तेसरो तँ ऐछे जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछू दिस ससरल बीचमे ठमकल चलैत रहल। ओना, आगू दिस डेग बढ़ाएब आकि पाछू दिस ससरबक कारण अपन-अपन सेहो अछि, एके कारण दुनूक नहि अछि। आगू दिस बढ़ैक जहिना दुनू कारण अछि तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दूटा कारण तँ अछिए। माने ई जे जहिना आगू दिस उचित डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन डेग जइमे अपना संग परिवारो-समाजक मंगल कामना निहित अछि आ दोसर अछि- जइमे केकरो मंगल कामना नहि भऽ अमंगले भेल। तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दू कारण अछिए। पहिल भेल बिना किछु केने-धेने ठाढ़ छी आ समए निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल मुँह तकैत रहलौं। तहिना दोसर कारण ईहो तँ ऐछे जे समैक संग चलैमे पानि-पाथर आ बिहाड़िक एतेक चोट पड़ल जे लाखो चेष्टा केला पछाइतो जिनगीक डेग पाछूए मुहेँ घुसैक गेल। माने ई जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ साधने छीना गेल आ समैक थपेर ओकरा थोपरा कऽ निच्चाँ उतारि देलक...।

"कृष्णदेव भाय ऐठाम आने साल जकाँ लछमीपूजा छिऐन, हकार छह। पहिल साँझक पूजा छी, तँए समयपर पहुँचैले अखन बेसी गप-सप्प नहि करह। तोंहू तैयार हुअ ग आ हमहूँ तैयार होइ छी। ओत्तै निचेनसँ गप-सप्प करब।"

ओना, उदयलाल मजकिया लोक अछि, तँए ओकरो अपन भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन-सँ-कठिन आ गम्भीर-सँ-गम्भीर विचारकेँ मजाक-मजाकमे उड़ाइयो दइए आ पुराइयो तँ दइते अछि। उदयलाल अगुताएलेमे बाजल- "परसादमे पाने-मखानटा बँटता आकि नवको किछु बँटता?"

उदयलालक बात सुनि नहलापर दहला फेकब वा बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुपे रहलौं। हमर चुपी देख आकि अपन मनमे उदयलालकेँ कोनो उद्गार रहै से तँ वएह जानए, मुदा उदयलाल फेर बाजल-

"भाय साहैब, पग-पग पोखैरकेँ जहिना कमला-कोसी खेलक आ पान-मखानकेँ परवासी भाय लोकैन खेलैन तहिना आब एकरा किताबे-कैसेटमे रहऽ दियौ।"

मनमे भेल जे बाजी- 'किताबो पढ़निहार कि आब अछि, आब तँ कैसेटसँ बेसी लोक पढ़ैए। जइसँ एते तँ लाभ भेबे कएल जे मिथिलाक शब्दमे अंग्रेजीक बाढ़ि एने शब्दकोश बढ़बे कएल अछि।'



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।
नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि
साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।
करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

साँझक आगमन होइते गोसाँइ स्थानसँ (गोसाँइ आगू) सँ लऽ कऽ अपन घर-ओसार, आँगन-दरबज्जा सहित माल-जालक घर, थैर, जल-जलाशय आ धार-धारा होइत समुद्रक घाटपर सेहो दीप जरत। सूर्यास्त होइपर आबि गेल। ओना, श्रम करैक शक्ति सेहो शरीरमे शेष छल आ जिनगीक अग्रिम क्रिया सेहो शेष छलहे। क्रियाक सरदर नियम यहए ने अछि जे एक काजक पछाइत दोसर काज रोपी। तँए कटबी नियम नहि अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। ओहो तँ अछिए जे काजक सघनताक बीचक जे जिनगी अछि, ओइमे समयानुकूल आ आवश्यकतानुकूल घटबी-बढ़बी करए पड़ैए। मुदा ऐठाम ने घटबीक प्रश्न अछि आ ने बढ़बीक, प्रश्न अछि जिनगीकेँ सुचारू ढंगसँ संचालित करैक, जइसँ समयपर दीपो जरा सकी आ पाबैन सेहो मना सकी।



राजदेव मण्डल

गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)

साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य)

करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

हम छी ऐ अंचलक किसान
देशक बढ़ेबाक अछि मान-सम्मान
बचेबाक अछि सबहक प्राण
भूखसँ दिएबाक अछि त्राण
हम करब संघर्ष नै छी बेजान
फेरसँ गाएब कृषि गान।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल

गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

हम नुकाएल छी ओहीठाम
जेतए सभ किछुक लगि रहल दाम
नोंचि नेने अछि ओ सभ
हमरा देहक मासु-हाड़
अंग-अंग छोड़ा कऽ
कऽ देने अछि तार-तार
नेने हाथमे हाड़
हँसैत अछि बेसम्हार
हम देखै सभ किच्छो
कानै छी जार-जार।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल

गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

लेने छी हाथमे
मनक तरूआरि
तरासि-तरासि अंगसँ
देबै उतारि
पोर-पोरसँ तोड़ि रहल छी
मनकेँ ओनएसँ मोड़ि रहल छी।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल

गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

परबाक छै भागे जरल
एहेन अतिथि जँ पहुँचल दुआरि
पोसा परबाकेँ दियौ आइ मारि
एहेन लोक कहिया आएत से नै जानि
फेर हेतै परबा बात लिअ मानि।
पानिमे डुमा कऽ जखैन लेलक जान
परबाकेँ भेल मनुखक पहचान।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राजदेव मण्डल

गाम : मुसहरनियाँ (मधुबनी)
साहित्यकार (मैथिली एवम् हिन्दी साहित्य), करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

हरक नाशपर सबहक आश
चहुदिस छिटकल हरिअर प्रकाश
उस्सर धरतीपर अहाँ
लिखै छी नव-नव इतिहास
अहीं कऽ सकै छी अन्नदान
जय हे किसान, जय हे किसान।

'बसुन्धरा' (काव्य संग्रह- 2013)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

अहाँक समान अहीं छी बुद्धिगर झूठो भऽ गेल साँच।
एहि दुनियाँमे अहाँ सन के अछि दूधो भऽ गेल छाँछ।।

शिक्षक भेल हाथक झुनझुना बजा बजा सभ खेलए।
बाजत काल्हि वंशक झुनझुना आँखि ने किनको खुलए।।

जाहि देश और जाहि प्रांतमे शिक्षक हएत कमतिया।
शिक्षा केर श्मशान बनत ओ जनमऽत मात्र भनसिया।।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

अपन अदौरी सबसँ नीमन
अनकर बऽड़ी फिक्का
अपन सड़ल दही अछि मिठगर
दोसराक टटका खट्टा।

नीति अनीतक चालि-चलैनसँ
बुझि रहल संसार
झारखंड बनलासँ की
अदिवासी भेल नेहाल।

‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’ (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

अपना मने खूब नचै छथि
अनको नीक लगैछैन की
ई सोचबाक पलखैत किनका छनि
अपनहि जान गमौता ई।

बुड़बक बेटा रुपैये काबिल
ई कहबी कोनो झुठ्ठे छै
कबिलाहा जब दंड घिचै छथि
बुड़िबकहाकेँ कहबै की।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

जुग पुरुष
बाते नहि
करमे होइत छैक।

गाए चरबऽ बला सभ
किसुनमे नहि भऽ
जाएत छैक
ताहि लेल
गोबरधन सेहो उठबऽ
पड़ैत छैक।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



डॉ. शिवकुमार प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष- हिन्दी विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय- निर्मली, (भू.ना. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा- बिहार)

निर्मलीक निर्मलतामे
मनक मलाल सभ मेटा रहल अछि
शिक्षाक ऐ महापंकमे
गामक जिनगी लेटा रहल अछि।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

जीयो और जीने दो मन्तर
जँ जपतै ई जग संसार।।
जग अमनकेँ जड़ि जुएतै
हरिएतै मानव अधिकार।।

जीयो और जीने दो मन्तर
राखू हरदम याद यौ।-2
किए केकरोसँ झगड़ा हेतै
हेतै किए विवाद यौ।-2
किए...।

आसमान छी सबहक पिता
भू मण्डल छी सबहक माता।-2
तँए भैयारी सभ जग वासी
मनमे करू सुआद यौ।-2
किए...।

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

मान नै केकर मन मानै छै
केकर मन मानै अपमान।।
अपनाबू सभ जीव जगतकेँ
पूरत अहूँकेँ ई अरमान।।

जेकरा नै जीवनक आधार
की बुझतै मानव अधिकार।-2
ऊँच नीचक हथियार उठा कऽ
जगसँ लड़ै लड़ाइ छै।।-2
बड़ी...।

मानवताक शासन मानू
सभ मानवकेँ बड़बैर जानु।-2
जीबैक हक छै सभकेँ बड़बैर
अन्धोकेँ ई देखाइ छै।-2
बड़ी...।

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

जागू बाबू देश बँचाबू
लबका खुनक बोलीसँ।।
जे मानवमे फुट कराबै
तेकरा मारू गोलीसँ।।

सेवाकेँ जन-जन बुनबै
मानवताक मन्तर गुनबै।-2
जग अमन केर माला लऽ कऽ
घर-घर धूम मचेबै यौ।-2

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

झारू बिनु नहि घरक शोभा
झारू बिनु नहि होएत हवण।।
हमरा बिनु नहि मन्दिर-मश्जिद
आर ने देशक संसद भवन।।

झारूसँ जुनि घृणा करू
ई तँ अनुचित बात छी। -2
जइसँ मिलै छै जगमे शान्ति
तेकर हम शुरूआत छी।। -2

जइ घर नहि छै हम्मर आदर
तइ घर घुसतै दुक्खक बादर। -2
पएर पसारत रोग बेमारी
ओघर भूतक जमात छी। -2
जइसँ मिलै...।

राजा रंक दानव आ देवा। -2
के गीन सकतै रूप-रंग हम्मर
सोचैवाली बात छी। - 2
जइसँ मिलै...।

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु

गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

अनवरत साहित्य लेखन

करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

"अहाँक मनोभाव देख हमरा लगैए जे मनमे जातिवादक दुर्गन्ध अखनो धरि ऐछे तँए भूखलो छी तँ नै खाएब। जँ से नै रहैत तँ जाति-पातिसँ ऊपर उठि गाम-समाजक सभ वर्गकेँ नौत दऽ खिऐबतौं ने, सभ आनन्दित होइतए। सबहक प्रेम आ जश सेहो भेटितए। सभ तँ प्रेम आ भावक भूखल होइए नै कि भातक भूखल। जखन अपने लोककेँ नीच बुझै छिऐ तँए ने लोको अहाँकेँ नीच बुझलक।अपने कहने जँ लोक मड़र होइतए तँ सभ मड़रे ने कहाइबतै। जीविका लेल ने लोक अलग-अलग काज करैए। मुदासभ तँ मनुखे जाति ने छी। से जँ आबो नै बुझबै तँ साड़ामे जाइबेर बुझि की करबै। एतेक तँ खियाल राखै पड़त जहिना सभ जाति मिलि समाजमे सबहक काजमे मदैत करैए तहिना जँ सभ जाति मिलि खानो-पीन, मेलो-बेवहार करब तखन ने समाजमे आपसी प्रेम-भाव बढ़त। अही अभावक कारणे ने आइ धरि समाज पछुआएले अछि।"

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु

गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

"गाछपर बिसवास अछि जे ओ अपन गुण-धरमकेँ सोलहन्नी नै बदलैए मुदा मनुखकेँ बदलैमे तँ कोनो समैए ने लगै छइ। महेशकेँ कहै छी तँ कहैए छुट्टीए ने मिलैए। पुतोहु तेहेन अँठिलाहि अछि जे ठोर-पर-ठोर बैसबे ने करै छइ। जँ कहियो छुट्टी हेबो करै छै तँ नैहरेमे बितबैए। हमरा के देखैए। हम जेहेन केलौं से भोगि रहल छी, एहेन कष्ट तँ भगवान सात-घर दुश्मनोकेँ नै देथुन।"

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

पैघ विद्वान समीक्षक सभक मुँहपर जबाव के देतैन? जखन जबाव देनिहार जौं सरकारी नौकरी करैबला रहत तँ चक्रव्यूहमे फँसा खा जेता। जौं कहीं प्राइवेटमे नौकरी करैत हएत तँ कान पकैड़ हटबा देता। जौं कहीं अखवार, पत्रिका वा फेश-बुकपर किछु टिप्पनी करत तँ धमकीपर धमकी पड़ए लगत। तँए बाजबसँ चुप्पे भला बुझै छला।

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

“अहाँ सभ तँ असलमे अबसरवादी सामन्तवादी कमतिया छी सालमे तीन-चारि मास पानिक धनिक भेने दर्शन दइ छी, मुदा हम तँ बारहो मास सबहक सामने अपन समाजमे रहै छी। लोकक कल्याण करै छी। से केना सेहो सुनियौं लिअ- जखन रौदी भेने लोक जट-जटीन बरखा खातिर खेलैए तखैन उक्खैरमे दऽ हमरा समाठसँ कुटैए आ हम बेदमोमे बाजि-बाजि मेघकेँ बजबै छी आ बरखा होइ छइ। लोकक कल्याण होइ छइ। हम केना ने लोकक हित-कल्याण लेल तियाग आ बलिदान करै छी? छैथ कियो हमरा सन तियागी, तँ हुनका सामने आनू, हुनके महंथी सभ मिलि दऽ देबैन।”

‘अंकुर’ (कथा संग्रह- 2016)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



राम विलास साहु
गाम : लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)
अनवरत साहित्य लेखन
करीब दर्जन भरि पोथीक प्रकाशन

जखन बुझै छिऐ जे डोम समाजक लेल एते पैघ लोक छै, बिना डोमक आगिसँ लोककेँ मरलोमे मुक्ति नइ भेटै छै, तखन डोमकेँ एते निच्चाँ किए बुझै छिऐ...। जखन कि जीबैतमे सभ डोमसँ छुबाइ छी, आ मुइलापर पैघ बुझै छी...। डोमो तँ अही समाजक लोक छी, मुदा गामसँ हटि कऽ वेचारा सभ गाममे बसैए। सभ कियो ओकरा अछोप बुझि आइ धरि लग बैस खेनाइ तँ दूर जे बातो ने करैए। एक लग्गा फटिकेसँ पुछ-पाछ करैए...। ऐबेरमे कोन असोकर्ज हुअ लगैए...।

'अंकुर' (कथा संग्रह- 2016)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



नन्द विलास राय

गाम : भपटियाही (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन, विभिन्न विधामे करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

गर्मी हुअए चाहे भीषण जाड़

जाड़सँ दलकैत अछि देहक हार

मुदा जूनून नहि छैन कनीक्को कम

जीब कि मरब तेकर नहि गम

मातृभूमिक रक्षाक लेल केने छैथ

अपन प्राण अर्पण

हुनका सभक लेल ‘चारूधाम’

अछि पोथी समरपन।

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)

‘हमर चरूधाम’ (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018, **विमर्श सादर आमंत्रित** : pallavi.publication.nirmali@gmail.com



नन्द विलास राय

गाम : भपटियाही (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन, विभिन्न विधामे करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

गाँधीजीक विचारधारा
अपनौने छैथ
छैथ पूरा सदाचारी
बुद्धक दर्शन
जनै छैथ
छैथ पैघ परोपकारी
रामायण आओर गीताक
छैन हुनका पूरा ज्ञान
तँए छैथ ओ निष्ठावान
हमरा गाममे छैथ
एकटा धनवान।

देह तँ कारी छैन हुनकर
मुदा दिलक छथिन साफ
केतबो पैघ कियो
अपराध करए हुनकर
कऽ दइ छथिन माफ
आनक धनकेँ समझै छैथ
बिल्कुल ओ हराम
हमरा गाममे छैथ
एकटा धनवान।

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)
'हमर चरूधाम' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018, **विमर्श सादर आमंत्रित :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com



नन्द विलास राय

गाम : भपटियाही (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन, विभिन्न विधामे करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

सभ महानगरमे होनि

अपन निजि मकान

पेट्रोल पम्प, बंगला

गाड़ी आलीशान

रिश्तेदारकैं भेटै

पद आओर सम्मान

यएह सभ तँ हुनकर छैन अरमान

अपन नेता छैथ केतेक महान।

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)

'हमर चरूधाम' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018, **विमर्श सादर आमंत्रित :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com



नन्द विलास राय

गाम : भपटियाही (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन, विभिन्न विधामे करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

महात्मा फूले आओर संन्त कबीरक
छला ओ सुच्चा भक्त
हिन्दु धर्मक मनुवादी बेवस्था
हुनका बुझेलैन बड़ गलत
हिन्दु धर्ममे जन्म लेलैथ
मुदा बौद्ध धर्म अपनेलैथ
देशेटामे नहि अपितु
रविदेश सभमे बड़ नाम कमेलैथ
कोन कारण हिन्दुसँ वौद्ध भेला
ऐ बातपर करै छी हम चिन्तन
भारतक महान विभूतिकेँ
हमर क्रोटि-क्रोटि नमन।

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)

'हमर चरूधाम' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018, **विमर्श सादर आमंत्रित :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com



नन्द विलास राय

गाम : भपटियाही (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन, विभिन्न विधामे करीब दर्जन भरि पोथीक लेखन/प्रकाशन

दलित परिवारमे जनम लऽ कऽ
देशक भेला विद्वान महान
हिनके नेतृत्वमे लिखल गेल
भारतक संविधान
ओइ परमज्ञानी मनुखक लेल
अर्पण करै छी हम श्रद्धा सुमन
भारत केर महान विभूतिकेँ
हमर क्रोटि-क्रोटि नमन
हमर क्रोटि-क्रोटि नमन।

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)

'हमर चरूधाम' (पद्य संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2018, **विमर्श सादर आमंत्रित :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड- लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

"आँइ यौ बाबा, तहिन तँ बाइढ़ोमे अहिना होइत हेतइ?"
बाबा बजला- "हँ, प्रकृतिमे पाँचटा जे तत्व अछि जेना अकास, सूर्य, हवा, जल आ धरती एही पाँचो तत्वसँ बनल ई शरीर अछि आ अही पाँचोक नजैर सभ मनुखपर बराबर अछि। यएह ने देवता भेल, जेकरामे कोनो भेद-भाव नइ होइ। अकासमे जेकरा जेतेक उड़बाक होइ उड़ि सकैए। सुरुजक नजैर सभपर बराबर पड़ैत अछि। मौसमक हिसाबसँ अपन गुण-अवगुण छइ। बैशाख-जेठमे गर्मी जन-मारुख होइए आ वएह गर्मीक जाड़मे संजीवनी बुटीक काज करैत अछि। तहिना जलोकेँ छै, सबहक लेल बराबर बरसैत अछि। मुदा वएह जल कहियो प्रलयकारी बाढ़ि सेहो आनि दैत अछि तँ कहियो पियासक लेल तरसबैत सेहो अछि। तहिना हवोकेँ छै, सबहक लेल बराबर। कहियो मारुख तँ कहियो शीतलता सेहो दैत अछि। तहिनाने धरतियोक अछि। धरतीकेँ धरती माता कहि कऽ लोक पुकारैत अछि, जहिना माए अपन धिया-पुताकेँ केतबो कष्ट सहि कऽ पालन-पोषन करैत अछि तहिना ने धरती सेहो करैत अछि।"

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : 'पुनर्नवा' (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड-
लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410
साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।
मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

माएकेँ एका-एक जोश एलै ठाढ़ भऽ असगरेमे बाजल- "ठहर, ई जे सड़ल-गलल नियम मर्द सभ बनौने अछि तेकरा तोड़ैक अछि। अपने मर्द सभ विधुर भेलाक बादो दूटा बिआह करत आ स्त्रीगणक लेल प्रतिबन्ध। की ओकरा कोनो सोगारथ नहि छइ? ओकरा कोनो अधिकार वा कर्तव्यक बोध नै छइ? की माल-जाल जकाँ कतौ खुटेसल रहत? आकि विधवा सबहक लेल बनारस वा काशीए मुक्तिक स्थान छै, जेतए वेश्यावृतिक अड्डा बनल छइ। नै ऐ कानून सभकेँ तोड़ैक अछि। हम नारी संगठन बनेबै आ सड़ल-गलल कानून सभकेँ हटेबै। आ समान अधिकार कर्तव्यक लेल लड़ाइ लड़ब।"

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली
साभार : 'पुनर्नवा' (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड- लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

“हइ चन्द्रकला दाय, मर्दसँ कहीं स्त्रीगण एकरूपता करत से सम्भव छइ। मर्दक बनाबट दोसर छै, स्त्रीगणक बनाबट दोसर छइ। काजो-धन्धा अलगे-अलगे छै से केना हएत। चन्द्रकला उत्तर दैत कहए लगली ठीके स्त्रीगणक दुश्मन स्त्रीगणे होइत अछि। कहियो कोनो बातकेँ विचारबो केलक हेन। जहिये बेटी जन्म लैत अछि तहियेसँ ओकरा हेय द्दष्टिसँ देखल जाइ छइ। कहैले तँ भगवतीकेँ, लक्ष्मीकेँ, कालीकेँ, सरस्वतीकेँ जन्म भेल हेन मुदा बेवहार केहेन करैत अछि से तँ सबहक नजैरपर छह।”

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : ‘पुनर्नवा’ (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड- लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

भूतक चर्चा करब तँ भूते ने धरत। वर्तमानकेँ सम्हारब तखने ने भविष्यो बनत। मर्द जँ विधुर होइत अछि तँ कियाक ने विधवे जकाँ समए बितबैत अछि। पहिने मर्दक वर्चस्व छेलै, जेना-जेना मन भेलै तेना-तेना कानून कैदा बनबैत गेल। है दाय सभ जँ औरतकेँ प्रसव पीड़ाटा नै करऽ पड़ै तँ एकोटा काज धरतीसँ अकास तकमे नै अछि जे महिला नै कऽ सकैत अछि। अपन विकासक लेल अपने आगू बढ़ए पड़त। गप-सप्पसँ किछु नै होइ छै। काज केने गुण-अवगुण बुझबहक। जाति तँ दूइएटा छै मर्द आ औरत। और सभ तँ बनौआ छिऐ।



कपिलेश्वर राउत : 1952

गाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, अनुण्डल- झंझारपुर, प्रखण्ड-लखनौर, जिला- मधुबनी। (बिहार) पिन : 847410

2001 इस्वी तक समाज सेवा।

साहित्य लेखन : 2009 इस्वीसँ।

मौलिक विधामे करीब आधा दर्जन पोथी केर लेखन/प्रकाशन

"बाबू आब चाहक दोकान छोड़ि दियौ। हम सभ भाँइ आब कमाए-खटाए लगलौं। आब अहाँक उमेरो पचपन-साठि भेल। सभ दिन कि काम-धन्धा करिते रहब।"

"बौआ कहलह तँ बड़ नीक बात, मुदा चाहे दोकानक बदौलत तूँ सभ मनुख बनलह आ आइ शहर जा रूपैआ-पैसा देखै छहक। हम तँ कौहुना अपन रोजगारमे लागल रहै छी। देहकेँ धुनि गुजर-बसर करै छी। कमाएल-खटाएल देह अछि, जेतेक शरीरकेँ चलाएब-फिराएब तेतेक ने देहक खून चालू रहत आ अपनो दुरुस्त रहब। तूँ सभ तँ हमरा काहिल बनबैक बात कहै छह। जाबत धरि पैरुख अछि ताबत धरि हम कमेबे-खटेबे करबह। रफिक मियाँकेँ नहि देखलहक, पाँचटा बेटा छै, पाँचो कमासुत, वेचाराकेँ सभ काम-धन्धा छोड़ा देलक। काज छुटिते वेचरा लोथ भऽ कऽ मरि गेल। नोकरियोबला केँ तहिना होइ छइ। जहाँ ने कि काजसँ रिटायरमेन्ट भेटल कि वेचारा अपनाकेँ कोनो जोकरक नहि बुझऽ लागल। जिबाक बीस बर्ख तँ जीबत पाँच बर्ख। मने झूस भऽ जाइ छइ।"

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली

साभार : 'पुनर्नवा' (कथा संग्रह) प्रकाशन वर्ष : 2017, © श्री कपिलेश्वर राउत



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

अहोश्री युगपति बुझनुक प्रियजन

आगत श्री युग देखैत कहू

सार्थक ज्ञान-विज्ञान सहारे

नाश बुद्धिकेँ फेकैत रहू

शुभचिन्तक होऊ नव पीढ़ीकेँ

पथ निर्देशक बनि बढ़ियौ

लोक समाजक श्रम-विधान संग

प्रीतम उपदेशक गढ़ियौ

जगत लोक मंगल पथ जोहए

खुखदा सांझ-विहान यौ, सगरो श्रद्धा... ।।०।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

बाट औ घाट केओ बिगाड़ैत रहल

ज्ञानी बाउर जकाँ बमकी दैत कहल

किछुयो सूझए कहाँ आब देखब कथी

अगवे दुर्दिन हँसए सुन्न कोठा महल

भाव-भाषाक अकबक्की कोनटा धएने

देखि कलजुग कहए काल पुरखा छलाह

गाम केर भलमानुष जकाँ ओ छलाह

काल पुरखा छलाह, गाम पुरखा छलाह।।4।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

छल-प्रपंचक राजनीति...

फूइस, पेंच, गलबैहिया धेने

गाम-घरमे रीत-कुरीति

ज्ञानक मन्दिर इसकुल जर्जर

दसगरजा घर सभटा गड़बर

जत्तय अन्हरा डिठरा बमकै

चतुर चलाको चुगला चमकै

दाँव-पेँच दोगलई कैँ दलाली

औनी पथारी सभ दऽ रहल अछि

तैँ नैँ हम विकासक प्रयास कऽ रहल छी

मुदा सर्वग्रास भऽ रहल अछि

ई विसंगति कैँ मानए के?

ई विसगतिकैँ जानए के?

कीऽऽऽ एहने हम विकास कऽ रहल छी?

जे सर्वग्रास औ ह्रास भऽ रहल अछि?

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

अछि जन प्रतिनिधि मौका परस्त।
भारत मिथिला अछि अस्त-व्यस्त।।
सत्ता सेवक खुशहाल मस्त।
कोन भष्ट पतिक अछि वरद हस्त।।
आहत अगस्त आहत अगस्त... ।।0।।

किछु संविधान सुख अछि निरस्त
मर्यादित अछि-फिरका परस्त
किए, आतंकी दिन-दिन प्रशस्त
राष्ट्रीयताकेँ देवए शिकस्त... ।।0।।

आशाक तिरंगा कोटि हस्त
झण्डोत्तोलन भए रहल सस्त
औ, सर्व धर्म समभाव पस्त
हाय, राष्ट्र पर्व केर उदय-अस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त... ।।0।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



प्रीतम कुमार 'निषाद'

गाम : मुरहदी (मधुबनी), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब दर्जनसँ बेसी पोथीक प्रकाशन

ज्ञान धरम घेंट जोड़ि कऽ कानए

बकुआएल भगवान यौ...

सगरो श्रद्धा भक्ति कनैए

मठ-मस्जिद संस्थान यौ...

ज्ञानी-पण्डित मुल्ला-साधु

बना रहल शैतान यौ...

सगरो श्रद्धा... ।।0।।

'गावय मिथिला लोक प्रगीत' (पद्य संग्रह- 2018)

सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)